



2026: AHC: 31259-DB

सुरक्षित

ए.एफ.आर.

इलाहाबाद उच्च न्यायालय

दांडिक अपील संख्या - 1502 वर्ष 2021

श्रीमती सीमा गुप्ता

.....अपीलार्थी

बनाम

उत्तर प्रदेश राज्य

.....प्रत्यर्थी

अपीलार्थी की अधिवक्ता: सुश्री श्वेता सिंह राणा, अधिवक्ता

प्रत्यर्थी(गण) के अधिवक्ता: शासकीय अधिवक्ता

साथ में :

1 अन्य संबद्ध वाद

न्यायालय संख्या - 41

माननीय न्यायमूर्ति जे.जे. मुनीर

माननीय न्यायमूर्ति विनय कुमार द्विवेदी

(माननीय न्यायमूर्ति जे.जे. मुनीर द्वारा सुनाया गया)

1. यह अपील श्री मो. कमर, तत्कालीन अपर सत्र न्यायाधीश/त्वरित न्यायालय संख्या 2, शाहजहांपुर के निर्णय और आदेश दिनांक 18.02.2020 के विरुद्ध निर्देशित है, जो सत्र परीक्षण

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



संख्या 519 वर्ष 2014 में पारित किया गया था, जिसके द्वारा अपीलार्थियों को भारतीय दंड संहिता (संक्षेप में 'भारतीय दंड संहिता') की धारा 302/34 के तहत दंडनीय अपराध के लिए सिद्धदोष ठहराया गया है और उनमें से प्रत्येक को आजीवन कारावास भुगतने का दंडादेश दिया गया है, साथ ही प्रत्येक पर 10,000 रुपये का जुर्माना लगाया गया है; और, जुर्माना अदा न करने की स्थिति में, छह महीने के साधारण कारावास का आदेश दिया गया है।

2. 20.08.2014 को थाना कलान, जिला शाहजहांपुर में ब्रजेश कुमार द्वारा एक प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराई गई थी, जिसमें कहा गया था कि सूचनादाता ग्राम महोदवन, थाना बिल्हौर, जिला कानपुर नगर का निवासी था। उनका सगा छोटा भाई, प्रदीप कुमार जिसकी आयु लगभग 28 वर्ष थी, जो अविवाहित था, पिछले तीन वर्षों से बारह कलान, थाना कलान में एक निजी शिक्षक के रूप में पढ़ा रहा था। वह वहां श्रीनगर इंटर कॉलेज में निजी तौर पर एक शिक्षक के रूप में कार्यरत था। इस रोजगार से उसे 2500 रुपये (संभवतः प्रतिमाह) मिलते थे और कुछ पैसा वह छात्रों को दिए जाने वाले निजी शिक्षण से कमाता था। प्रदीप कुमार बारह कलान गांव में एक कमरे में रहता था, जिसे उसने मुकेश गुप्ता से किराए पर लिया था, जो मुकेश गुप्ता के घर का ही एक हिस्सा था। सूचनादाता की माता श्रीमती सियारानी भी अक्सर अपने बेटे के स्थान पर आती-जाती रहती थीं। 19.08.2014 को रात 11.38 बजे, सूचनादाता को अपने चलभाष संख्या 9621820180 पर 8853630754 संख्या वाले चलभाष से एक दूरभाष कॉल प्राप्त हुई। सूचनादाता ने बताया कि मुकेश गुप्ता ने उसे बारह कलान से दूरभाष किया था, जो उसके भाई का मकान मालिक था, और उसे बताया कि सूचनादाता के भाई ने उसकी बेटी के साथ कुछ बहुत बुरा किया है। सूचनादाता के अनुसार, मुकेश गुप्ता ने कहा कि प्रदीप ने विवाह के बिना उसकी बेटी को गर्भवती कर दिया है और वह नहीं जानता कि इसके बारे में क्या किया जाए। दूरभाष करने वाले ने प्रदीप की सूचनादाता से बात कराई। सूचनादाता के भाई ने उसे बताया कि उसके मकान मालिक मुकेश गुप्ता और उसकी पत्नी सीमा ने अपनी बेटी 'एक्स' के साथ अवैध संबंधों का आरोप लगाते हुए उसे एक कमरे में बंद कर दिया है और वे उसे मार डालने का इरादा रखते हैं। वह अपनी माता से बात करना चाहता था। सूचनादाता ने अपनी माता सियारानी की अपने भाई से बात कराई, जो बहुत घबराया हुआ था। सूचनादाता आगे कहता है कि उसने और उसकी माता ने मुकेश और उसकी पत्नी से प्रदीप को नुकसान न पहुंचाने की विनती की और कहा कि वह अपनी माता के साथ अगली सुबह तक उनके स्थान पर पहुंच जाएगा। सूचनादाता के अनुसार, मुकेश गुप्ता ने

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



चलभाष पर जिस तरह से उससे बात की, उससे उसे किसी अनहोनी का अंदेशा हो गया। इसलिए, सूचनादाता, अपनी माता के अतिरिक्त, राकेश कटियार, नरेंद्र कटियार, अशोक, विनोद, ईश्वर दयाल और प्रदीप को भी साथ ले गया, एक वाहन किराए पर लिया और बारह कलान के लिए निकल गया। सूचनादाता को उसके भाई के एक सहकर्मी मास्टर यादव का दूरभाष प्राप्त हुआ, जिसने उसके भाई के चलभाष संख्या 7525079412 से बात करते हुए उसे सूचित किया कि उसके भाई प्रदीप कटियार और 'एक्स' दोनों को मुकेश गुप्ता और उसकी पत्नी सीमा ने उनके गले में कुछ कसकर और उनका गला घोटकर मार डाला है। सूचनादाता और उसका परिवार बहुत दुखी हुआ और बारह कलान पहुंचा, जहां उन्होंने मुकेश गुप्ता की दुकान के एक बाहरी कमरे में अपने भाई प्रदीप और मुकेश की बेटी 'एक्स' के शव पड़े देखे। सूचनादाता ने कहा कि मुकेश और उसकी पत्नी ने अवैध संबंधों के कारण दोनों की हत्या कर दी है। सूचनादाता ने यह भी बताया कि मुकेश पर उसके भाई का लगभग 1 लाख रुपये बकाया था। सूचनादाता के अनुसार, यह भी मुकेश द्वारा सूचनादाता के भाई और अपनी ही बेटी की हत्या करने का कारण था।

3. उक्त सूचना के आधार पर, 20.08.2014 को दोपहर 12.30 बजे एक प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज की गई, जिससे अपराध संख्या 429 वर्ष 2014, धारा 302 भारतीय दंड संहिता, थाना कलान, जिला शाहजहांपुर के रूप में मामला उत्पन्न हुआ। पुलिस ने विवेचना (जांच) शुरू की। उन्होंने 20.08.2014 को प्रदीप कुमार के साथ-साथ 'एक्स' की अप्राकृतिक मृत्यु के संबंध में पंचनामा (मृत्यु-समीक्षा) किया। प्रदीप के शव का पंचनामा दोपहर 1.15 बजे शुरू होकर दोपहर 2.25 बजे समाप्त हुआ, जबकि 'एक्स' का पंचनामा दोपहर 2.30 बजे शुरू होकर दोपहर 3.30 बजे समाप्त हुआ। उसके बाद शवों को शव परीक्षण (पोस्टमार्टम) के लिए भेज दिया गया। प्रदीप कुमार की शव परीक्षण रिपोर्ट दिनांक 21.08.2014 में मृत्यु का कारण मृत्यु-पूर्व गला घोटने के परिणामस्वरूप श्वासावरोध (दम घुटना) बताया गया। 'एक्स' की शव परीक्षण रिपोर्ट, जो भी 21.08.2014 की है, मृत्यु का कारण मृत्यु-पूर्व गला घोटने के परिणामस्वरूप श्वासावरोध (दम घुटना) दर्शाती है।
4. रिकॉर्ड पर वर्मा चिकित्सालय और प्रसूति गृह, रेलवे स्टेशन मार्ग, सिविल लाइंस, बदायूं की 19.08.2014 की एक रिपोर्ट मौजूद है, जिसे 'एक्स' से संबंधित प्रदर्श क-2 के रूप में चिह्नित किया गया है, जो उसे गर्भवती दर्शाती है।

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



5. पुलिस ने विवेचना के बाद, 17.09.2014 को मुकेश गुप्ता और उनकी पत्नी श्रीमती सीमा गुप्ता के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के तहत दंडनीय अपराध का आरोप लगाते हुए आरोप-पत्र दायर किया।
 6. विद्वान मजिस्ट्रेट ने अपराध का संज्ञान लिया और अपीलार्थियों को तलब किया। वे न्यायालय के समक्ष उपस्थित हुए, जिस पर विद्वान मजिस्ट्रेट ने उन्हें दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 207 के तहत प्रदान किए गए प्रासंगिक अभियोजन दस्तावेजों की प्रतियां उपलब्ध कराईं। तत्पश्चात, विद्वान मजिस्ट्रेट ने मामले को सत्र न्यायालय को सुपुर्द कर दिया, जहां यह आरोप तय करने के लिए विद्वान सत्र न्यायाधीश के समक्ष आया।
 7. विद्वान सत्र न्यायाधीश ने आदेश दिनांक 19.11.2014 के माध्यम से मुकेश गुप्ता और सीमा गुप्ता पर समान आशय साझा करने और इसके अग्रसरण में, सूचनादाता के भाई प्रदीप कुमार और उनकी बेटी 'एक्स' का गला घोटकर हत्या करने का संयुक्त रूप से आरोप तय किया। उन पर भारतीय दंड संहिता की धारा 302/34 के तहत दंडनीय अपराध कारित करने का आरोप लगाया गया। अपीलार्थियों ने अपराध से इनकार किया और परीक्षण (मुकदमे) की मांग की।
8. अभियोजन पक्ष ने अपने मामले के समर्थन में निम्नलिखित गवाहों को पेश किया:
1. अभियोजन गवाह-1 – ब्रजेश कुमार, प्रथम सूचनादाता और मृतक प्रदीप कुमार के भाई,
 2. अभियोजन गवाह-2 – सियारानी, मृतक प्रदीप कुमार की माता,
 3. अभियोजन गवाह-3 – नरेंद्र कुमार, उन व्यक्तियों में से एक, जो बिल्हौर, कानपुर नगर से सूचनादाता के साथ आए थे,
 4. अभियोजन गवाह-4 – राकेश, एक अन्य व्यक्ति, जो बिल्हौर, कानपुर नगर से सूचनादाता के साथ आया था,
 5. अभियोजन गवाह-5 – डॉ. श्रीमती मंजू वर्मा, बदायूं की चिकित्सक, जिन्होंने 'एक्स' का परीक्षण किया था, पेट का अल्ट्रासाउंड किया था और उसे गर्भवती होने की राय दी थी,

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



6. अभियोजन गवाह-6 – डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव, जिन्होंने प्रदीप और 'एक्स' के शवों का शव परीक्षण किया था,
 7. अभियोजन गवाह-7 – उप निरीक्षक प्रेम चंद्र शर्मा, जो तत्कालीन समय में थाना कलान, जिला शाहजहांपुर में हेड मोहरीर के पद पर तैनात थे, जिन्होंने चिक प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज की थी और आवश्यक जनरल डायरी प्रविष्टियां की थीं,
 8. अभियोजन गवाह-8 – सेवानिवृत्त उप निरीक्षक रणवीर सिंह, जो तत्कालीन समय में थाना कलान, जिला शाहजहांपुर में उप निरीक्षक के पद पर तैनात थे, जिन्होंने शवों का पंचनामा किया था, और,
 9. अभियोजन गवाह-9 – शेर सिंह तोमर, तत्कालीन थानाध्यक्ष, थाना कलान, जिला शाहजहांपुर और अपराध के जांच अधिकारी।
9. अभियोजन पक्ष द्वारा अपना मामला स्थापित करने के लिए निम्नलिखित दस्तावेजी साक्ष्य और सामग्री पेश की गई:

क्रम संख्या	प्रदर्श संख्या	प्रदर्शित दस्तावेज संक्षिप्त विवरण के साथ
1	प्रदर्श क-1	थाना कलान, जिला शाहजहांपुर में दर्ज लिखित रिपोर्ट दिनांक 20.08.2014, अभियोजन गवाह-1, ब्रजेश कुमार द्वारा साबित
2	प्रदर्श क-2	अल्ट्रासाउंड (प्रसूति) रिपोर्ट दिनांक 19.08.2014, अभियोजन गवाह-5, डॉ. श्रीमती मंजू वर्मा द्वारा साबित

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



3	प्रदर्श क-3	मृतक प्रदीप कुमार की पोस्टमार्टम रिपोर्ट, दिनांक 21.08.2014, अभियोजन गवाह-6, डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव द्वारा साबित
4	प्रदर्श क-4	मृतका 'एक्स' की पोस्टमार्टम रिपोर्ट, दिनांक 21.08.2014, अभियोजन गवाह-6, डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव द्वारा साबित
5	प्रदर्श क-5	चिक प्रथम सूचना रिपोर्ट दिनांक 20.08.2014, अभियोजन गवाह-7, उप निरीक्षक प्रेम चंद्र शर्मा द्वारा साबित
6	प्रदर्श क-6	जनरल डायरी प्रविष्टि संख्या 29 की कार्बन कॉपी, अभियोजन गवाह-7, उप निरीक्षक प्रेम चंद्र शर्मा द्वारा साबित
7	प्रदर्श क-7	प्रदीप कुमार की पंचनामा रिपोर्ट दिनांक 20.08.2014, अभियोजन गवाह-8, सेवानिवृत्त उप निरीक्षक रणवीर सिंह द्वारा साबित

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



8	प्रदर्श क-8	प्रदीप कुमार के संबंध में मुख्य चिकित्सा अधिकारी को पत्र दिनांक 20.08.2014, अभियोजन गवाह-8, सेवानिवृत्त उप निरीक्षक रणवीर सिंह द्वारा साबित
9	प्रदर्श क-9	प्रदीप कुमार का चालान लाश (पुलिस फॉर्म संख्या 13), अभियोजन गवाह-8, सेवानिवृत्त उप निरीक्षक रणवीर सिंह द्वारा साबित
10	प्रदर्श क-10	प्रदीप कुमार की फोटो लाश, अभियोजन गवाह-8, सेवानिवृत्त उप निरीक्षक रणवीर सिंह द्वारा साबित
11	प्रदर्श क-11	'एक्स' की पंचनामा रिपोर्ट दिनांक 20.08.2014, अभियोजन गवाह-8, सेवानिवृत्त उप निरीक्षक रणवीर सिंह द्वारा साबित
12	प्रदर्श क-12	'एक्स' के संबंध में मुख्य चिकित्सा अधिकारी को पत्र दिनांक 20.08.2014, अभियोजन गवाह-8, सेवानिवृत्त उप निरीक्षक रणवीर सिंह द्वारा साबित

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



13	प्रदर्श क-13	'एक्स' का चालान लाश (पुलिस फॉर्म संख्या 13), अभियोजन गवाह-8, सेवानिवृत्त उप निरीक्षक रणवीर सिंह द्वारा साबित
14	प्रदर्श क-14	'एक्स' की फोटो लाश, अभियोजन गवाह-8, सेवानिवृत्त उप निरीक्षक रणवीर सिंह द्वारा साबित
15	प्रदर्श क-15	घटना स्थल का नजरी नक्शा (स्थल योजना), अभियोजन गवाह-9, शेर सिंह तोमर, जो तत्कालीन समय में थाना कलान, जिला शाहजहांपुर में थानाध्यक्ष के रूप में तैनात थे, द्वारा साबित
16	प्रदर्श क-16	नोकिया कंपनी के चलभाष का बरामदगी मेमो दिनांक 09.09.2014, अभियोजन गवाह-9, शेर सिंह तोमर, जो तत्कालीन समय में थाना कलान, जिला शाहजहांपुर में थानाध्यक्ष के रूप में तैनात थे, द्वारा साबित
17	प्रदर्श क-17	आरोप-पत्र दिनांक 17.09.2014, अभियोजन गवाह-9, शेर सिंह तोमर, जो तत्कालीन समय में थाना कलान, जिला शाहजहांपुर में थानाध्यक्ष के रूप में तैनात थे, द्वारा साबित

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



18	प्रदर्श क-18 से 27	चलभाष संख्या 8853630754 से संबंधित कॉल विवरण, अभियोजन गवाह-9, शेर सिंह तोमर, जो तत्कालीन समय में थाना कलान, जिला शाहजहांपुर में थानाध्यक्ष के रूप में तैनात थे, द्वारा साबित
19	भौतिक प्रदर्श 1	चलभाष, नोकिया कंपनी
20	भौतिक प्रदर्श 2	कपड़ा जिसके द्वारा चलभाष को सील किया गया था

10. अभियोजन साक्ष्य के समापन पर, अपीलार्थियों के बयान दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के अंतर्गत दर्ज किए गए।

11. विचारण न्यायालय ने निर्णय और आदेश दिनांक 18.02.2020 के माध्यम से अपीलार्थियों को पहले से ही निर्दिष्ट शर्तों में सिद्धदोष ठहराया और दंडादेश दिया है।

12. व्यथित होकर, श्रीमती सीमा गुप्ता द्वारा दांडिक अपील संख्या 1502 वर्ष 2021 संस्थित की गई है जबकि मुकेश गुप्ता द्वारा जेल अपील संख्या 63 वर्ष 2021 प्रस्तुत की गई है। दोनों अपीलों पर एक साथ सुनवाई की गई है और इस सामान्य निर्णय और आदेश द्वारा तय किए जाने का प्रस्ताव है।

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



13. वर्तमान अपील और संबद्ध जेल अपील के समर्थन में अपीलार्थियों की विद्वान अधिवक्ता सुश्री श्वेता सिंह राणा और राज्य की ओर से विद्वान अपर शासकीय अधिवक्ता श्री अनिल कुमार मिश्रा को सुना गया।

14. मामला पूरी तरह से परिस्थितिजन्य साक्ष्य पर टिका है क्योंकि किसी ने भी घटना को नहीं देखा है। इसलिए, हम अभियोजन पक्ष द्वारा आग्रह की गई दोषारोपण वाली परिस्थितियों पर विचार करने के लिए आगे बढ़ेंगे और यह पता लगाएंगे कि क्या ये उस अखंड श्रृंखला का निर्माण करती हैं, जो अपीलार्थियों के अपराध के अलावा किसी अन्य निष्कर्ष की ओर नहीं ले जाती है। दूसरी ओर, हम अपीलार्थियों की ओर से जोर दी गई परिस्थितियों पर विचार करेंगे ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि क्या अपीलार्थियों के साक्ष्य के विरुद्ध समग्र रूप से अभियोजन के मामले के यथार्थवादी विचार पर, अभियोजन की कहानी के बारे में कोई वैध और संभावित संदेह निकाला जा सकता है, ताकि अपीलार्थियों को इसका लाभ प्राप्त करने का हकदार बनाया जा सके। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि अभियोजन पक्ष को अपना मामला सभी उचित संदेहों से परे स्थापित करना होता है।

15. सबसे प्रमुख वह उद्देश्य है जो अपीलार्थियों को अपनी ही बेटी की जान लेने के लिए प्रेरित कर सकता था। रुढ़िभंजकों को छोड़ दें तो, माता-पिता और बच्चे के बीच रक्त की आत्मीयता माता-पिता को बच्चे की हत्या में सबसे कम संभावित संदिग्ध बना देगी। यदि अद्वितीय या दुर्लभ नहीं, तो एक बहुत ही अलग तरह के उद्देश्य की आवश्यकता होती है, एक समझदार और विवेकशील व्यक्ति के लिए अपने ही बच्चे को जीवन नामक अमूल्य वस्तु से वंचित करने के लिए। फिर भी, विचलित व्यवहार वाले कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जो ऐसा असामान्य कदम उठा सकते हैं और इस प्रकार का अपराध कर सकते हैं, जहां कोई अन्य कभी नहीं करेगा। इससे भी बढ़कर, समाज में बहुत ही विवेकशील व्यक्ति हो सकते हैं जो अपनी सामान्य प्रवृत्तियों के विपरीत कुछ विशेष प्रकार की परिस्थितियों का सामना करने पर अपने बच्चे की जान ले सकते हैं।

16. इस मामले में साक्ष्य से पता चलता है कि अपीलार्थियों की नाबालिग बेटी, जो 15 वर्ष की लड़की थी, ने 28 वर्ष के परिपक्व व्यक्ति प्रदीप कुमार के साथ शारीरिक संबंध बनाए। वह अपीलार्थियों के घर में एक किराएदार के रूप में रहता था और श्रीनगर इंटर कॉलेज में एक शिक्षक के रूप में काम करने के अतिरिक्त, छात्रों को निजी तौर पर पढ़ाकर अपनी आजीविका कमाता था। प्रदीप और 'एक्स' के बीच शारीरिक संबंधों के कारण वह गर्भवती हो गई और गर्भावस्था आगे बढ़ चुकी थी। रिकॉर्ड पर

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



19.08.2014 की एक अल्ट्रासाउंड (प्रसूति) रिपोर्ट मौजूद है जिसे डॉ. मंजू वर्मा द्वारा साबित किया गया है, प्रदर्शक-2, जो यह दर्शाती है कि 19.08.2014 को, जब उक्त रिपोर्ट लिखी गई थी, 'एक्स' 25 सप्ताह के एक जीवित गर्भाशय भ्रूण के साथ गर्भवती थी। डॉ. मंजू वर्मा अभियोजन गवाह-5 के रूप में गवाह-बक्से में उपस्थित हुईं और उपरोक्त रिपोर्ट को साबित किया। इस प्रकार, यह स्पष्ट रूप से स्थापित हो जाता है कि अपीलार्थियों की बेटी, जो स्वीकार्य रूप से अविवाहित थी, विवाह के बाहर गर्भवती थी।

17. उसकी गर्भावस्था का तथ्य 21.08.2014 की शव परीक्षण रिपोर्ट, प्रदर्शक-4 के अवलोकन पर और भी स्थापित हो जाता है, जो एक गर्भवती गर्भाशय की रिपोर्ट करती है। शव परीक्षण रिपोर्ट मृत्यु के समय का अनुमान लगभग डेढ़ दिन पहले लगाती है। चूंकि रिपोर्ट 21.08.2014 की है, इसलिए मृत्यु की तिथि स्पष्ट रूप से 19.08.2014 निकलती है, जब डॉ. मंजू वर्मा की रिपोर्ट, जिसमें उसे गर्भवती पाया गया था, अस्तित्व में आई थी। प्रथम सूचनादाता के अनुसार, 19.08.2014 को रात 11.38 बजे, उसे अपने चलभाष पर एक दूरभाष आया था, जहां अपीलार्थी और 'एक्स' के पिता मुकेश गुप्ता ने सूचनादाता को यह बताने के लिए दूरभाष किया था कि सूचनादाता के भाई के उसकी बेटी के साथ अवैध संबंध थे। उसने उसे गर्भवती कर दिया था। फिर मुकेश गुप्ता ने सूचनादाता के भाई, प्रदीप से बात कराई, जिसने कहा कि मुकेश गुप्ता पर उसका 1 लाख रुपये बकाया था और वह झूठा आरोप लगा रहा था कि उसने उसकी बेटी को गर्भवती कर दिया है।

18. सूचनादाता ने प्रथम सूचना रिपोर्ट में यह भी कहा कि उसका भाई बहुत डरा हुआ लग रहा था। सूचनादाता का परिवार और परिचित, सभी बारह कलान के लिए निकल गए, जहां अपीलार्थी रहते थे, लेकिन बाद में उसे रामवीर सिंह यादव नामक किसी व्यक्ति का दूरभाष आया, जिसने कहा कि उसके भाई प्रदीप और 'एक्स' की हत्या कर दी गई है। दूरभाष करने वाले इस व्यक्ति ने कहा कि अपीलार्थियों ने प्रदीप और 'एक्स' के गले में फंदा डाल दिया था और उन दोनों की हत्या कर दी थी। अपीलार्थियों के स्थान पर पहुंचने पर, सूचनादाता ने मुकेश के घर के एक हिस्से, एक कमरे के अंदर अपने भाई प्रदीप और 'एक्स' के शव पाए।

19. अभियोजन गवाह-1 के रूप में गवाही देते हुए, उसने अपीलार्थी मुकेश गुप्ता से अपनी बेटी के साथ अपने भाई के अवैध संबंधों, जिसके परिणामस्वरूप अवांछित गर्भावस्था हुई, के बारे में दूरभाष प्राप्त करने के प्रथम सूचना वृत्तांत का समर्थन किया है। मृतक को भी सूचनादाता से बात करने के लिए लाइन

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



पर लिया गया था, जिसने अपने बारे में वह बातें कहीं जो प्रथम सूचना रिपोर्ट में दर्ज हैं। मुख्य परीक्षा में, इन बयानों को स्थान मिला है और साथ ही यह तथ्य भी कि सूचनादाता का परिवार अपने रिश्तेदारों और सहयोगियों के साथ 20.08.2014 की सुबह 7 बजे मुकेश गुप्ता के स्थान के लिए निकल गया था, यह तथ्य अभियोजन गवाह-1 की जिरह में आता है। फिर मुख्य परीक्षा में कहा गया है कि बाद में सूचनादाता को मास्टर रामवीर सिंह यादव से दूरभाष आया कि उसके भाई प्रदीप और 'एक्स' की हत्या कर दी गई है। गुप्ता के स्थान पर पहुंचने के बाद ही वह अपने भाई के कमरे में गया, जहां उसने दोनों के शव पाए-उसके भाई के और 'एक्स' के भी। मुकेश वहां नहीं मिला, लेकिन उसकी पत्नी वहां थी, जिसके बारे में कहा जाता है कि उसने सूचनादाता को बताया था कि उसके भाई ने विवाह के बाहर उसकी बेटी को गर्भवती कर दिया था। सूचनादाता की गवाही में यह भी कहा गया है कि मुकेश की पत्नी, अर्थात् श्रीमती सीमा गुप्ता, चिल्लाकर यह स्वीकारोक्ति कर रही थी कि इसी कारण से उसने उन दोनों को मार डाला है।

20. उपरोक्त साक्ष्य यह स्पष्ट करते हैं कि अपीलार्थियों का यह मानना था कि उनकी बेटी सूचनादाता के भाई, प्रदीप के साथ एक अवैध संबंध में थी, जिसके परिणामस्वरूप वह विवाह के बाहर गर्भवती हो गई थी। यह तथ्य स्पष्ट रूप से दोनों अपीलार्थियों द्वारा सत्य माना गया था। जैसा कि घटनाओं के सामने आने से यह तथ्य प्रदर्शित होगा कि 'एक्स' गर्भवती थी, 19 अगस्त 2014 को इस बात का पता चलना उस समाज के मूल्यों को देखते हुए स्पष्ट रूप से अपीलार्थियों के लिए एक बड़ा झटका था, जिसका वे एक हिस्सा हैं। अपीलार्थियों की प्रतिक्रिया, जिसकी सूचनादाता ने रिपोर्ट की है और उसी दिन दोनों पीड़ितों की मानववध द्वारा मृत्यु जिस दिन चिकित्सक द्वारा 'एक्स' के गर्भवती होने की रिपोर्ट दी गई थी, यदि वास्तव में अपीलार्थियों ने दोनों पीड़ितों की हत्या की थी, स्पष्ट रूप से उनके लिए इस बुरे काम को करने के एक उद्देश्य के रूप में कार्य करती है।

21. हमें इस तथ्य का न्यायिक संज्ञान लेना चाहिए कि प्राचीन काल से लेकर समकालीन समय तक, एक औसत भारतीय के लिए विवाह के बाहर बेटी का गर्भवती होना एक दुःस्वप्न है। यह हमेशा माता-पिता की ओर से अनियंत्रित प्रतिक्रियाओं को आमंत्रित करता है, जो अधिकतर हिंसक होती हैं, चाहे वह स्वयं के लिए हों, बेटी के लिए हों, गलत काम करने वाले के लिए हों या दोनों के लिए हों। शर्मिंदगी आमतौर पर किसी भी वर्ग के व्यक्तियों के बीच होगी, लेकिन शिक्षा द्वारा परिष्कृत लोग अलग तरीके से प्रतिक्रिया कर सकते हैं, जहां अस्वीकृति, सुलह आदि के बावजूद, हिंसा हो भी सकती है और नहीं भी। कुछ लोग कानूनी या अवैध कुछ तरीके और साधन अपनाकर शर्मिंदगी से बचने की दिशा में काम कर सकते हैं।

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



अपीलार्थी भारतीय समाज के सामान्य और औसत वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं, जहां स्थिति के प्रति अत्यधिक प्रतिक्रियाएं आम बात हैं। इसलिए, हमारी यह राय है कि अपीलार्थियों के पास आरोपित अपराध करने का उद्देश्य था। अपीलार्थियों की विद्वान अधिवक्ता, सुश्री श्वेता सिंह राणा का यह जोरदार कथन, कि अभियोजन पक्ष द्वारा अपीलार्थियों के विरुद्ध कोई उद्देश्य स्थापित नहीं किया गया था, स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

22. विचार की जाने वाली अगली परिस्थिति यह तथ्य है कि 19 अगस्त, 2014 को देर रात 11.38 बजे, सूचनादाता को अपने चलभाष संख्या 9621820180 पर चलभाष संख्या 8853630754 से एक दूरभाष प्राप्त हुआ। दूरभाष करने वाले ने अपनी पहचान बारह कलान के अपीलार्थी मुकेश गुप्ता के रूप में दी और अचानक सूचनादाता को यह तथ्य बताया कि उसके (सूचनादाता के) भाई प्रदीप कुमार का मुकेश की बेटी के साथ अवैध संबंध था। उसने यह भी कहा कि प्रदीप ने उसकी बेटी को गर्भवती कर दिया है। यह परिस्थिति दर्शाती है कि अपनी बेटी की गर्भावस्था का पता चलने के तुरंत बाद, अपीलार्थी मुकेश गुप्ता हताश था और उसने देर रात मृतक प्रदीप के भाई, सूचनादाता को उसके चलभाष पर दूरभाष किया। स्पष्ट रूप से, जैसा कि साक्ष्य दिखाएगा, वे दोनों एक-दूसरे को नहीं जानते थे और उनके बीच ऐसे संबंध तो बिल्कुल नहीं थे कि कोई देर रात के समय दूसरे को दूरभाष करे। दूरभाष का विषय और जिस समय इसे किया गया था, वह उस हताशा को बयां करता है जिसका अपीलार्थी मुकेश गुप्ता ने अनुभव किया था। उपरोक्त परिस्थिति से जुड़ा हुआ तथ्य यह है कि अपीलार्थी मुकेश गुप्ता ने सूचनादाता के भाई की उससे चलभाष पर बात कराई।

23. सूचनादाता और उसके भाई के बीच दूरभाष पर हुई बातचीत से यह प्रकट हुआ कि प्रदीप पर मुकेश और उसकी पत्नी, दूसरा अपीलार्थी सीमा गुप्ता द्वारा उसकी (मुकेश की) बेटी को गर्भवती करने के आरोप का सामना करना पड़ रहा था, और वह डरा हुआ लग रहा था। सूचनादाता को मुकेश से प्राप्त दूरभाष के बाद दो और दूरभाष आए, जो निश्चित रूप से रात में बाद में आए होंगे। सूचनादाता ने मुकेश की अपनी माता से बात कराई। वहां भी, विषय वस्तु उसकी बेटी की गर्भावस्था के बारे में थी। इन तथ्यों का उल्लेख अभियोजन गवाह-1 (मुख्य परीक्षा) और उसकी माता श्रीमती सियारानी, अभियोजन गवाह-2 की गवाही में मिलता है। इस परिस्थिति के भाग के रूप में यह तथ्य है कि जब सूचनादाता अपने परिवार और सहयोगियों के साथ अगले दिन सुबह 11.00 बजे बारह कलान पहुंचा, तो उसने अपने भाई और 'एक्स' को अपीलार्थियों के घर के अंदर स्थित एक कमरे में मृत पाया, दोनों का गला घोंटा गया था।

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



24. अपीलार्थियों की विद्वान अधिवक्ता ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि उसके बारह कलान पहुंचने या उस गंतव्य के लिए निकलने से पहले ही रामवीर सिंह यादव से सुबह 6.00 बजे उसके भाई की मृत्यु के बारे में चलभाष पर हुआ संचार, समय के बारे में गलत है, जो चलभाष के रिकॉर्ड से साबित होगा। उन्होंने इस संबंध में हमारा ध्यान प्रदर्श क-21 की ओर आकर्षित किया है, जहां सूचनादाता को 20.08.2014 को रामवीर सिंह यादव से सुबह 6.00 बजे नहीं बल्कि सुबह 10.38 बजे दूरभाष आया था। हत्या की सूचना देने वाले दूरभाष का समय बिल्कुल भी तात्त्विक नहीं है, भले ही इसके बारे में कुछ विसंगति हो। तात्त्विक बात यह परिस्थिति है कि अपनी बेटी की गर्भावस्था का पता चलने पर 19.08.2014 की शाम को अपीलार्थी मुकेश गुप्ता बहुत उत्तेजित था। उसने इसका दोष मृतक पर मढ़ा, जिसके कारण उसने 19.08.2014 को देर रात और फिर रात में और भी देर से एक बार फिर सूचनादाता को दूरभाष किया। इनके साथ यह तथ्य कि पीड़ितों की हत्या 19.08.2014 की देर रात और 20.08.2014 की सुबह 11.00 बजे से पहले के बीच किसी समय की गई थी, और उनके शव अपीलार्थियों के परिसर के अंदर स्थित एक कमरे में पाए गए थे, संपूर्ण तत्त्वर को दोषारोपण वाली बनाते हैं।

25. क्या मौतें मानववध (हत्या) थीं या आत्महत्या, यह अगला विचारणीय प्रश्न है। अभियोजन पक्ष का कहना है कि मौतें मानववध थीं, जो अपीलार्थियों की ओर अचूक उंगली उठाती हैं, जबकि अपीलार्थियों का कहना है कि दोनों पीड़ितों की मृत्यु आत्महत्या से हुई। यहां प्रासंगिक तथ्य यह है कि पीड़ितों की मृत्यु मानववध से हुई या आत्महत्या से। यदि उनकी मृत्यु आत्महत्या से हुई है, तो अपीलार्थियों के लिए कोई दोष (अपराधिता) नहीं होगा। हालांकि, यदि उनकी मृत्यु मानववध के परिणामस्वरूप हुई है, तो यह अपीलार्थियों के विरुद्ध प्रकट होने वाली परिस्थितियों की श्रृंखला में जुड़ जाएगा।

26. विद्वान अपर शासकीय अधिवक्ता ने पुरजोर तर्क दिया है कि न केवल पीड़ितों की हत्या की गई थी, बल्कि यह सम्मान के लिए हत्या (ऑनर किलिंग) का मामला है, जहां अपनी बेटी और सूचनादाता के भाई के बीच अवैध संबंधों पर आक्रोशित होकर, जो समाज में उन्हें अपमानित करेगा, अपीलार्थियों ने दोनों को खत्म कर दिया।

27. यह निर्धारित करने के लिए कि मौतें आत्महत्या थीं या मानववध, शव परीक्षण द्वारा साक्ष्यित चोटों की प्रकृति और आसपास की परिस्थितियों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



28. मृतक प्रदीप से संबंधित शव परीक्षण रिपोर्ट, प्रदर्श क-3, मृत्यु से पूर्व की निम्नलिखित चोट (चोटों) पर ध्यान देती है:

(1) एक कसने का निशान - 40 सेमी x 3.0 सेमी गर्दन के चारों ओर निरंतर क्षैतिज रूप से और पूरी तरह से घेरे हुए, कसने का निशान थायरॉयड उपास्थि (कार्टिलेज) के नीचे दाहिनी मास्टॉयड प्रक्रिया (कान के पीछे की हड्डी) से 6.0 सेमी नीचे और ठुड्डी से 7.0 सेमी नीचे और बाईं मास्टॉयड प्रक्रिया से 6.0 सेमी नीचे स्थित है, खांचे की हड्डी लाल रंग की है जिसके किनारे रक्तसावित हैं और कसने के निशान के बीच उपचर्म ऊतक के खंड पर रक्तसाव है।

29. मृत्यु का कारण 'मृत्यु से पूर्व गला घोटने के परिणामस्वरूप श्वासावरोध (दम घुटना)' बताया गया है। यद्यपि कंठिका अस्थि (हाइपोइड बोन) खंडित नहीं पाई गई है, लेकिन श्वासनली के छल्ले खंडित हैं।

30. मृतक 'एक्स' से संबंधित शव परीक्षण रिपोर्ट, प्रदर्श क-4, मृत्यु से पूर्व की निम्नलिखित चोट (चोटों) की रिपोर्ट करती है:

(1) एक कसने का निशान - 30.0 सेमी x 4.0 सेमी गर्दन के चारों ओर निरंतर क्षैतिज रूप से और पूरी तरह से घेरे हुए, कसने का निशान थायरॉयड उपास्थि के नीचे, ठुड्डी से 6.5 सेमी नीचे, दाहिनी मास्टॉयड प्रक्रिया से 5.5 सेमी नीचे, बाईं मास्टॉयड प्रक्रिया से 5.6 सेमी नीचे स्थित है। खांचे का आधार लाल रंग का है जिसके किनारे रक्तसावित हैं और कसने के निशान के नीचे उपचर्म ऊतक के खंड पर रक्तसाव है।

31. मृत्यु का कारण मृत्यु से पूर्व की चोटों के परिणामस्वरूप श्वासावरोध है। श्वासनली के छल्ले और कंठिका अस्थि दोनों खंडित पाए गए।

32. शव परीक्षण चिकित्सक, डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव, अभियोजन गवाह-6, जो पोस्टमार्टम रिपोर्ट साबित करने के लिए गवाह-बक्से में उपस्थित हुए, अपनी मुख्य परीक्षा में चोटों और शव परीक्षण के दौरान जो कुछ भी पाया उसके विवरण के बाद, अपनी जिरह में कहा है कि उन्होंने शवों पर कसने के निशान के अलावा कोई अन्य बाहरी चोट या खरोंच नहीं पाई। संघर्ष का कोई निशान नहीं था। शव परीक्षण रिपोर्ट के अनुसार, यह आत्महत्या का मामला हो सकता है क्योंकि संघर्ष का कोई निशान नहीं था। प्रदर्श क-4 किसी बाहरी चोट का उल्लेख नहीं करता है। मृतक 'एक्स' की मृत्यु आत्महत्या से हो

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



सकती है। शव परीक्षण चिकित्सक के अनुसार, यह संभव है कि दोनों मृतकों की मृत्यु आत्महत्या से हुई हो।

33. अपीलार्थियों की विद्वान अधिवक्ता ने शव परीक्षण चिकित्सक की गवाही के साथ-साथ अभियोजन गवाह-3 और अभियोजन गवाह-4 के साक्ष्य पर यह प्रस्तुत करने के लिए बहुत जोर दिया है कि शवों पर कोई चोट नहीं पाई गई। उन्होंने अभियोजन गवाह-3 की गवाही की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है, जहां अपनी जिरह में, इस गवाह, नरेंद्र कुमार, ने कहा है:

"लाश को मैंने देखा था लेकिन उस पर कोई चोट नहीं थी।"

34. अपीलार्थियों की विद्वान अधिवक्ता ने इस बात पर भी जोर दिया है कि शव परीक्षण चिकित्सक ने यह देखा है कि मृतक प्रदीप कुमार एक भारी शारीरिक संरचना वाला अच्छी तरह से गठा हुआ व्यक्ति था। अपीलार्थियों की विद्वान अधिवक्ता द्वारा पूरे जोर के साथ यह प्रस्तुत किया गया है कि मौतों का कारण बनने वाले कसने के निशान के अलावा, किसी अन्य चोट का न होना, यह दर्शाता है कि मृतक, विशेष रूप से प्रदीप, बिना संघर्ष के मर गया। विद्वान अधिवक्ता के अनुसार, यह निर्णायक रूप से यह इंगित करेगा कि कोई विवाद, बल का प्रयोग या संघर्ष नहीं था, जो गला घोटकर की गई हत्या की विशेषता है। घातक घाव को छोड़कर किसी अन्य चोट का न होना यह इंगित करता है कि मृत्यु आत्महत्या थी। हमारे इस स्पष्ट प्रश्न पर कि गला घोटना आत्महत्या के मामले के साथ असंगत था और यह मानववध का संकेत था, अपीलार्थियों की विद्वान अधिवक्ता ने हमारे समक्ष इस तथ्य पर जोर दिया कि चिकित्सा न्यायशास्त्र ने ऐसे मामलों को मान्यता दी है, जहां गला घोटकर आत्महत्या की जा सकती है। उन्होंने जयसिंह पी मोदी के चिकित्सा न्यायशास्त्र पर प्रसिद्ध ग्रंथ, जिसका शीर्षक 'ए टेक्स्टबुक ऑफ मेडिकल ज्यूरिस्प्रूडेंस एंड टॉक्सिकोलॉजी', सत्ताईसवां संस्करण है, पर भरोसा किया है। उन्होंने हमारा ध्यान पृष्ठ 586 और 587 पर अध्याय 20 - 'श्वासावरोध से मृत्यु' में उल्लिखित एक तरफ फांसी से मृत्यु और दूसरी तरफ गला घोटने के स्पष्ट संकेतों के बीच सारणीबद्ध अंतर की ओर आकर्षित किया है। उन्होंने सारणी के पहले बिंदु का संदर्भ दिया है, जो कहता है कि फांसी अधिकतर आत्महत्या होती है, जबकि गला घोटना अधिकतर मानववध होता है। अपीलार्थियों की विद्वान अधिवक्ता आग्रह करती हैं कि अंतर की यह तुलना दर्शाती है कि गला घोटना हमेशा मानववध के मामले के अनुरूप नहीं होता है। आत्महत्या के रूप में भी गला घोटना हो सकता है। उपरोक्त तथ्य से हमें और अधिक प्रभावित करने के

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



लिए, विद्वान अधिवक्ता ने मोदी (की पुस्तक) के पृष्ठ संख्या 585 पर निम्नलिखित गद्यांश की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है:

"20.3.6.2 क्या गला घोटना आत्महत्या, मानववध या आकस्मिक था

आत्महत्या के लिए गला घोटना बहुत आम नहीं है, हालांकि कभी-कभी ऐसे मामले मिलते हैं। इन मामलों में, बेहोशी छा जाने के बाद कसने वाले साधन (फंदे) को तंग रखने के लिए हमेशा कोई न कोई युक्ति की जाती है। यह गर्दन के चारों ओर कई बार डोरी लपेटकर और फिर एक गांठ बांधकर किया जाता है, जो आमतौर पर एक ही होती है और गर्दन के सामने या बगल या पीछे होती है, किसी छड़ी, पत्थर या किसी अन्य ठोस सामग्री के माध्यम से डोरी को कसकर मरोड़कर, या डोरी के सिरों को हाथों या पैरों से या दीवार में खूंटी से या बिस्तर के पैर से बांधकर कसा जाता है। ऐसे मामलों में, गर्दन की गहरी संरचनाओं में चोटें और शरीर के अन्य भागों पर हिंसा के निशान, एक नियम के रूप में, अनुपस्थित होते हैं।"

35. दूसरी ओर, विद्वान अपर शासकीय अधिवक्ता ने प्रस्तुत किया है कि इस तथ्य के बारे में कोई संदेह नहीं है कि मृतकों की मृत्यु गला घोटने से हुई, जो समग्र परिस्थितियों में, मानववध के अनुरूप है; आत्महत्या नहीं।

36. हमने इस मामले पर विचारपूर्ण ध्यान दिया है। चिकित्सा-विधिक राय आम तौर पर इस स्थिति को स्वीकार करती है कि गला घोटना अधिकतर मानववध के मामले के अनुरूप होता है और आत्महत्या के लिए गला घोटना दुर्लभ है। मोदी (की पुस्तक) में जो व्याख्या है, जिस पर वाक्पटुता से भरोसा किया गया है, इस तथ्य को स्वीकार करती है कि आत्महत्या के लिए गला घोटना असामान्य है। जिन मामलों में आत्महत्या के लिए गला घोटने की घटना हुई होगी, मोदी स्वीकार करते हैं कि होश खोने और जीवन समाप्त होने तक कसने वाले साधन को तंग रखने के लिए हमेशा कोई न कोई युक्ति अपनाई जाती है। मोदी ने स्पष्ट रूप से राय दी है कि, "यह गर्दन के चारों ओर कई बार डोरी लपेटकर और फिर एक गांठ बांधकर किया जाता है, जो आमतौर पर एक ही होती है और गर्दन के सामने या बगल या पीछे होती है, किसी छड़ी, पत्थर या किसी अन्य ठोस सामग्री के माध्यम से डोरी को कसकर मरोड़कर, या डोरी के सिरों को हाथों या पैरों से या दीवार में खूंटी से या बिस्तर के पैर से बांधकर कसा जाता है"। ये वे युक्तियां हैं जिन्हें घातक प्रभाव शुरू होने तक कसने वाले साधन को तंग रखने के लिए नियोजित किया जाना चाहिए। इस मामले में, शवों के चारों ओर ऐसी कोई युक्ति नहीं पाई गई।

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



37. ऐसा नहीं है कि कोई डोरी या कसने वाला साधन था जो खूंटी या बिस्तर के पाए से जुड़ा हुआ था ताकि स्वयं गला घोटने के मामले के अनुरूप निरंतर दबाव डाला जा सके, और, इससे भी बढ़कर आत्महत्या। शव परीक्षण चिकित्सक, अभियोजन गवाह-6 ने निस्संदेह इस तथ्य की गवाही दी है कि शव पर कोई अन्य चोट या संघर्ष का निशान नहीं है। उन्होंने यह राय दी है कि शव परीक्षण रिपोर्ट के आधार पर, यह आत्महत्या का मामला हो सकता है क्योंकि संघर्ष का कोई निशान नहीं था। उन्होंने यह भी राय दी है कि दोनों मामलों में, अर्थात् प्रदीप और 'एक्स' के मामलों में, यह संभव है कि मौतें आत्महत्या के कारण हुई हों। इस बिंदु पर अभियोजन गवाह-6 की गवाही आखिरकार एक विशेषज्ञ का राय साक्ष्य है। यहां भी, जिरह यह नहीं दिखाती है कि मोदी ने जो राय दी है उसके आधार पर चिकित्सक के सामने यह रखा गया था कि, क्या कसने वाले साधनों के माध्यम से घातक दबाव बनाए रखने के लिए किसी युक्ति के अभाव में, यह अभी भी संभवतः एक या दोनों मामलों में आत्महत्या से मृत्यु का मामला हो सकता है। इसलिए, चिकित्सक की राय का भी उस बिंदु पर कोई निर्णायक प्रभाव नहीं है, जहां उस दुर्लभ प्रकार के मामले, अर्थात् स्वयं गला घोटने के बारे में कोई निष्कर्ष निकाला जा सके। इस संबंध में, गोदावरीश मिश्रा बनाम कुंतला मिश्रा और अन्य, (1996) 11 एससीसी 264 का संदर्भ दिया जा सकता है, जहां यह अभिनिर्धारित किया गया था:

“23. हमारे विचार में, मृतक द्वारा स्वयं गला घोटकर आत्महत्या करने के मामले को खारिज किया जाना चाहिए। मोदी की 'मेडिकल ज्यूरिस्प्रूडेंस एंड टॉक्सिकोलॉजी' और टेलर की 'प्रिंसिपल्स एंड प्रैक्टिस ऑफ मेडिकल ज्यूरिस्प्रूडेंस' दोनों में, जिसकी ओर श्री रंजीत कुमार द्वारा हमारा ध्यान आकर्षित किया गया था, यह स्पष्ट रूप से इंगित किया गया है कि स्वयं गला घोटकर आत्महत्या करना बहुत दुर्लभ है। स्वयं गला घोटकर आत्महत्या करने के लिए, आत्महत्या करने वाले व्यक्ति को एक युक्ति की सहायता लेनी चाहिए ताकि गला घोटने से मृत्यु होने तक पर्याप्त बल का प्रयोग सुनिश्चित हो सके। ऐसी युक्ति के बिना, पर्याप्त बल नहीं लगाया जा सकता है क्योंकि शुरू में बल लगाने के साथ ही संवेदनहीनता (बेहोशी) विकसित होगी जिसके कारण डोरी के सिरों को खींचने वाले हाथ ढीले हो जाएंगे। वर्तमान मामले में, शोर सुनकर मृतक की जांच करने आए अभियोजन गवाह 6 और अभियोजन गवाह 7 दोनों में से किसी के द्वारा कोई युक्ति नहीं देखी गई थी। आरोपी ने घटना स्थल पर कोई युक्ति भी नहीं देखी है और दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के तहत अपने बयान में, उसने ऐसे किसी भी तथ्य का खुलासा नहीं किया है, जो स्वयं गला घोटकर आत्महत्या के मामले के समर्थन में उसके विशेष ज्ञान में था।

अस्वीकरण

“अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



25. वर्तमान मामले में, यह स्पष्ट रूप से स्थापित हो चुका है कि मृत्यु गला घोटने के कारण हुई थी। केवल इसलिए कि चिकित्सक (अभियोजन गवाह 11) ने पोस्टमार्टम करते समय मृतक की गर्दन की गहरी मांसपेशियों पर चोटें देखीं, यह नहीं माना जा सकता कि चिकित्सक द्वारा देखी गई ऐसी चोटों ने दृढ़ता से स्थापित किया था कि यह स्वयं गला घोटने से मृत्यु का मामला था, क्योंकि मोदी द्वारा जो राय दी गई है। हम यहां यह संकेत दे सकते हैं कि स्वयं गला घोटकर आत्महत्या, विद्वान लेखक के अनुसार, एक दुर्लभ घटना है। ऐसा ही विचार टेलर की 'प्रिंसिपल्स एंड प्रैक्टिस ऑफ मेडिकल ज्यूरिस्प्रूडेंस' में भी व्यक्त किया गया है। यह असंभव नहीं है कि ध्यानपूर्वक अध्ययन किए जाने वाले गला घोटकर आत्महत्या के बड़ी संख्या में मामलों के अभाव में, इस तरह की आत्महत्या से जुड़ी विभिन्न विशेषताओं को अधिक सटीकता से इंगित नहीं किया जा सका। इसके अलावा, उक्त ग्रंथ में व्यक्त की गई राय, अधिक से अधिक, विशेषज्ञ की राय है, जो यद्यपि सम्मान के साथ उचित विचार की पात्र है, विशेष रूप से तब पूर्णतः निर्णायक नहीं मानी जा सकती, जब स्पष्ट रूप से स्थापित अन्य साक्ष्य विपरीत संकेत देते हैं।

26. यहां यह भी संकेत दिया जा सकता है कि चिकित्सा न्यायशास्त्र पर मोदी की पुस्तक और चिकित्सा न्यायशास्त्र पर टेलर की पुस्तक दोनों में, यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि स्वयं गला घोटकर आत्महत्या करने के लिए, मृत्यु होने तक बल बनाए रखने के लिए एक युक्ति की सहायता लेनी पड़ती है, अन्यथा, आवश्यक बल बनाए रखना संभव नहीं है। ऐसी युक्ति की अनुपस्थिति स्पष्ट रूप से स्वयं गला घोटकर आत्महत्या की किसी भी संभावना को खारिज करती है। उपरोक्त तथ्य में, आरोपी को छोड़कर किसी अन्य व्यक्ति को मृतक की हत्या करने का कोई अवसर नहीं था। इस मामले में परिस्थितिजन्य साक्ष्य मृतक की हत्या करने में आरोपी की संलिप्तता स्थापित करने में बिल्कुल निर्णायक हैं। उच्च न्यायालय द्वारा लिया गया दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से साक्ष्य के वजन के विरुद्ध है और इसे एक संभावित दृष्टिकोण नहीं माना जा सकता है जो लिया जा सकता था।"

38. इसलिए, हम यह निर्धारित करते हैं कि यह गला घोटकर की गई मानववध (हत्या) की एक सामान्य घटना है और निश्चित रूप से आत्महत्या के लिए गला घोटने का वह असामान्य और दुर्लभ मामला नहीं है।

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



39. यह परिस्थिति कि मानववध (हत्याएं) एक कमरे में हुए, जो अपीलार्थियों के परिसर का हिस्सा है, जिसके बारे में कोई वैकल्पिक स्पष्टीकरण नहीं है कि अपीलार्थियों के अतिरिक्त किसकी वहां तक पहुंच थी या कौन मानववध कर सकता था, परिस्थितियों की श्रृंखला में बहुत प्रासंगिक है।

40. अभियोजन गवाह-1, ब्रजेश कुमार ने अपनी मुख्य परीक्षा में गवाही दी है:

"..... फिर मैं प्रदीप के कमरे पर आया। मेरे भाई की और 'एक्स' की लाश कमरे के अन्दर पड़ी थी।..."

41. अभियोजन गवाह-2, श्रीमती सियारानी ने अपनी मुख्य परीक्षा में कहा है:

"..... जब हम लोग मुकेश के मकान पर वीराकला पहुंचे तो मेरा लड़का प्रदीप मुकेश के अन्दर घर के कमरे में मरा पड़ा था तथा दूसरी तरफ उसकी लड़की 'एक्स' मरी पड़ी थी।....."

42. अभियोजन गवाह-3, नरेंद्र कुमार ने मुख्य परीक्षा में उस स्थान के बारे में गवाही दी है, जहां शव पाए गए थे, इस प्रकार:

"..... और 11 बजे बारह कला पहुंचे जब हम लोग मुकेश व सीमा के घर पहुंचे तो देखा प्रदीप मरा पड़ा था उसके गले कपड़ा लिपटा था तथा पड़ोस के ही सीमा की बेटी 'एक्स' का भी लाश पड़ी थी उसके गले में भी कपड़ा बंधा था।....."

43. इसी प्रकार, अभियोजन गवाह-4, राकेश ने अपनी मुख्य परीक्षा में कहा है:

"..... सभी लोग सफेद गाड़ी से बाराकला को निकले मैं भी था, बाराकला सुबह करीब 10-11 बजे के बीच में पहुंचे, मुकेश गुप्ता के मकान में बहुत भीड़ थी तथा पुलिस भी मौजूद थी उसके बाद हम लोग मकान के अन्दर गये तथा एक कमरे में गले में फन्दा लगी दो लाश एक प्रदीप की थी तथा दूसरी मुकेश गुप्ता की लड़की की थी....."

44. इनमें से कुछ गवाहों की जिरह में, यद्यपि मुकेश गुप्ता के घर की भौगोलिक स्थिति या उस कमरे के आकार का पता लगाने का प्रयास किया गया है, जहां शव पड़े हुए पाए गए थे, अभियोजन पक्ष के गवाहों से ऐसा कोई सुझाव नहीं दिया गया है और न ही कुछ ऐसा प्राप्त किया गया है जो उनके इस सुसंगत रुख का खंडन करता हो कि शव अपीलार्थियों के परिसर में स्थित एक कमरे के अंदर पड़े थे। अन्य बातों को

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



छोड़कर, भले ही वह कमरा, जहां शव पाए गए थे, मृतक प्रदीप को किराए पर दिया गया था, यह अपीलार्थियों के परिसर का एक अभिन्न अंग था। इसलिए, अपीलार्थियों द्वारा उन परिस्थितियों के बारे में कुछ स्पष्टीकरण दिया जाना चाहिए जिनमें प्रदीप और उनकी बेटी की हत्या की गई थी, जो उनकी बेगुनाही के अनुरूप हो। यह विशेष रूप से इसलिए है क्योंकि दोनों शव अपीलार्थियों के परिसर के भीतर एक ही कमरे में पड़े थे।

45. नजरी नक्शे (स्थल योजना) के सावधानीपूर्वक अवलोकन से पता चलता है कि प्रदीप का किराए का कमरा उस कमरे के पश्चिम में है जहां शव पाए गए थे। इसलिए, यह स्पष्ट है कि जिस कमरे में शव पाए गए थे, वह वह कमरा नहीं था जिसमें प्रदीप रहता था, बल्कि अपीलार्थियों के कब्जे वाले परिसर का एक हिस्सा था। शव अपीलार्थियों के परिसर में स्थित एक कमरे के अंदर पाए गए हैं, जो प्रदीप की अनन्य किराएदारी में भी नहीं था। साक्ष्य अधिनियम की धारा 106 के तहत यह स्पष्ट करने का भार अपीलार्थियों पर होगा कि मृतक की मानववध द्वारा मृत्यु किन परिस्थितियों में हुई। ऐसा इसलिए है क्योंकि अपीलार्थी ही घर के मालिक और निवासी हैं और उन्हें उस तथ्य का विशेष ज्ञान होगा, जिसे किसी और ने नहीं देखा है या संभवतः नहीं देख सकता था।

46. स्वीकार्य रूप से, यह परिस्थितिजन्य साक्ष्य का मामला है। जहां तक अभियोजन पक्ष का संबंध है, अभियोजन पक्ष के लिए गवाही देने वालों या उनके लिए गवाही दे सकने वालों में से किसी ने भी यह नहीं देखा है कि 19/20 अगस्त 2014 को मनहूस रात को अपीलार्थियों के घर के अंदर क्या हुआ था, जिसके कारण प्रदीप और 'एक्स' की मानववध द्वारा मृत्यु हुई। इसलिए, यह अपीलार्थियों पर निर्भर है कि वे उन परिस्थितियों को स्पष्ट करें जिनमें मानववध किया गया था। परिस्थितियों को स्पष्ट करने में विफलता या ऐसा स्पष्टीकरण देना जो सत्य नहीं पाया जाता है, परिस्थितियों में एक कड़ी जोड़ देगा, जो अपीलार्थियों के अपराध की ओर इशारा करेगा। गजानन दशरथ खराटे बनाम महाराष्ट्र राज्य, (2016) 4 एस.सी.सी. 604 में, सर्वोच्च न्यायालय द्वारा यह अभिनिर्धारित किया गया था:

"13. जैसा कि साक्ष्य से देखा गया है, अपीलार्थी गजानन और उसके पिता दशरथ और माता मानकर्णाबाई एक साथ रह रहे थे। 7-4-2002 को, अपीलार्थी-आरोपी की माता दूसरे गांव दहीगांव गई हुई थी। अभियोजन पक्ष ने 7-4-2002 की रात को अपीलार्थी की उसके घर पर उपस्थिति साबित कर दी है। इसलिए, अपीलार्थी यह स्पष्ट करने के लिए कर्तव्यबद्ध है कि उसके पिता की मृत्यु कैसे हुई। जब घर के अंदर गोपनीयता में हत्या जैसा अपराध किया जाता है, तो मामले को स्थापित करने का प्रारंभिक भार

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



निस्संदेह अभियोजन पक्ष पर होगा। साक्ष्य अधिनियम की धारा 106 के आलोक में, अपराध कैसे किया गया था, इसका ठोस स्पष्टीकरण देने का एक समान भार घर के निवासियों पर होगा। घर के निवासी केवल चुप रहकर और इस कल्पित आधार पर कोई स्पष्टीकरण न देकर नहीं बच सकते कि अपना मामला स्थापित करने का भार पूरी तरह से अभियोजन पक्ष पर है और आरोपी का स्पष्टीकरण देने का कोई कर्तव्य नहीं है। घटना की तिथि पर, जब आरोपी और उसके पिता दशरथ घर में थे और जब आरोपी के पिता मृत पाए गए, तो आरोपी को यह स्पष्टीकरण देना था कि उसके पिता को चोट कैसे लगी। जब आरोपी अपने पिता की मानववध द्वारा मृत्यु के बारे में कोई स्पष्टीकरण नहीं दे सका, तो यह आरोपी के विरुद्ध एक मजबूत परिस्थिति है कि वह अपराध करने के लिए जिम्मेदार है।

47. अपने परिसर में किए गए अपराध के बारे में स्पष्टीकरण देने के लिए, अपीलार्थी दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 (संक्षेप में, 'दंड प्रक्रिया संहिता') की धारा 313 के अंतर्गत आगे आए हैं और दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 233(2) के अंतर्गत अलग-अलग बयान प्रस्तुत किए हैं। दोनों अपीलार्थियों द्वारा दिया गया स्पष्टीकरण पूरक है। अपीलार्थी सीमा गुप्ता ने अपने लिखित बयान में कहा है कि उनके 12 वर्षीय नाबालिग बेटे वागीश को होली के 3-4 दिन बाद गर्म तेल से जलने की चोटें आई थीं और उसका उपचार चल रहा था। 19/20.08.2014 की मध्यरात्रि में, वह अपने घर की ऊपरी मंजिल पर अपने बेटे वागीश आयु 12 वर्ष, बेटियों बबीता आयु 10 वर्ष, सरिता आयु 8 वर्ष और बेटे कुलदीप आयु 6 वर्ष के साथ सो रही थी। उसकी बेटी 'एक्स' भूतल पर सो रही थी।

48. प्रासंगिक समय पर उसके पति के पास पंजीकरण संख्या यूपी-27टी-5190 वाला एक मैक्सी महिंद्रा मिनी ट्रक था। वह वहां किसी प्रकार के बुधवार के बाजार में उन्हें बेचने के लिए बकरियों के झुंड के साथ जसवंत नगर, इटावा के लिए निकला था। जब अपीलार्थी सीमा गुप्ता अगली सुबह उठी, तो उसने अपनी बेटी 'एक्स' को पुकारा, लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। जब वह भूतल पर आई, तो उसने प्रदीप और 'एक्स' को प्रदीप के कमरे में मृत पड़ा देखा। उसने एक पी.सी.ओ. से अपने पति को उसके सेलफोन नंबर 9794339343 पर सूचित किया। उसके कहने पर, उसने बारह कलान पुलिस चौकी, थाना कलान को दूरभाष किया, और उन्हें दोनों मौतों की सूचना दी। पुलिस ने उसे चौकी पर रोक लिया और प्रदीप के परिवार के सदस्यों को सूचित किया। उनके आने के बाद, पुलिस ने एक कहानी रची और इस अपीलार्थी और उसके पति को अपराध में फंसा दिया। उसने आगे कहा है कि सेल नंबर 8853630754 उसका या उसके पति का नहीं है। पुलिस की कहानी मनगढ़ंत है और वह निर्दोष है।

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



49. इसी प्रकार, अपीलार्थी मुकेश गुप्ता ने दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के साथ पठित धारा 233(2) के तहत अपने बयान में कहा है कि वह 19.08.2014 को अपने मैकसी ट्रक, जिसका पंजीकरण संख्या यूपी-27टी-5190 है, में चालक जयवीर पुत्र रवींद्र के साथ वहां बुधवार के बाजार में बेचने के लिए बकरियों के झुंड के साथ जसवंत नगर, इटावा के लिए घर से निकला था। उसे अपने सेल नंबर 9794339343 पर अपनी पत्नी से दूरभाष आया कि उसकी बेटी 'एक्स' और प्रदीप के शव प्रदीप के कमरे में पड़े हैं। उसने तुरंत अपनी पत्नी को पुलिस को सूचित करने की सलाह दी। उसकी पत्नी ने बारह कलान पुलिस चौकी, थाना कलान को सूचित किया। पुलिस ने कानपुर नगर में प्रदीप के घर दूरभाष किया और थानाध्यक्ष, थाना कलान को भी सूचित किया। तड़के सुबह, पुलिस दोनों शवों को थाना कलान ले गई और प्रदीप के परिवार के सदस्यों के आने पर, एक कहानी रची, जिससे उसे और उसकी पत्नी को एक झूठे मामले में फंसा दिया गया। उसने तब कहा है कि उसकी पत्नी बच्चों के साथ ऊपरी मंजिल पर सो रही थी और प्रदीप और 'एक्स' ने आत्महत्या कर ली थी। इस अपीलार्थी ने यह भी कहा है कि मोबाइल नंबर 8853630754 उसका नहीं है और पुलिस ने पूरी कहानी मगदंत बनाई है।

50. अपीलार्थियों ने बचाव पक्ष प्रस्तुत किया और दो बचाव गवाहों का परीक्षण किया, अर्थात्, जयवीर पुत्र रवि, बचाव गवाह-1 और सोने लाल उर्फ सोनू पुत्र ओम प्रकाश, बचाव गवाह-2।

51. जयवीर वह चालक है, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह अपीलार्थी मुकेश गुप्ता को वहां बुधवार के बाजार में बकरियां बेचने के लिए जसवंत नगर इटावा की अपनी व्यापारिक यात्रा पर ले गया था। बचाव गवाह-1 ने अपनी मुख्य परीक्षा में इस प्रकार गवाही दी है:

".....मैं प्राइवेट चालक हूँ तथा मेरे पास कई वर्षों से वाहन चलाने का लाइसेंस है करीब 5-6 वर्षों से है। वाहन चलाने का लाइसेंस है हाज़िर अदालत मुल्जिम मुकेश गुप्ता के पास मैकसी मेहिन्द्र छोटा ट्रक यूपी 27 टी 5190 था जिसको मैं मुकेश गुप्ता के साथ रहकर चलाता था, दिनांक 19-8-2014 को मंगलवार के दिन धर्मेन्द्र व्यापारी की बकरियां लोड करके जसवंतनगर इटावा लेकर मुकेश गुप्ता के साथ गया था सुबह करीब चार बजे जसवंतनगर के पास ढावे पर रोक गये थे। सुबह के समय मुकेश गुप्ता के मोबाइल नम्बर 9794339343 पर मुकेश गुप्ता की पत्नी सीमा गुप्ता का फोन आया जिस पर मुकेश गुप्ता ने उन्हें चौकी पर पुलिस को सूचना देने को कहा था तथा मुझे बताया था कि 'एक्स' और प्रदीप ने प्रदीप के कमरे में लाशें पड़ी होने की बात बतायी है उस दिन सुबह बुधवार था....."

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



52. अपनी जिरह में, बचाव गवाह-1 ने कहा है:

"मैं तारीख पता चलने पर आया हूँ पुलिस ने विवेचना के दौरान पुलिस ने मुझसे कोई पूछताछ नहीं किया था और न ही मैंने पुलिस को कुछ बताया था अब मुकेश गुप्ता का ट्रक उनके पास नहीं है। बीक चुका है। घटना के दो तीन माह बाद बिक गया था इस घटना के बाद भी मैं ट्रक चलाता रहा मुझे वकील साहब ने कोई गवाही नहीं सिखाई है। 'एक्स' प्रदीप जब मरे थे तब मैं मौके पर नहीं था ट्रक लेकर गया था यह कहना गलत है कि मैंने जो भी बयान दिया वह मुकेश गुप्ता के वकील साहब के सिखाने की वजह से झूठा दिया है। यह भी कहना गलत है कि दिनांक 19-8-2019 को शाम के वक्त मुकेश गुप्ता के साथ बकरियां लेकर जसवंत नगर इटावा न गया हो।...."

53. बचाव गवाह-2 सोने लाल उर्फ सोनू, जो मुकेश गुप्ता का भाई (साढ़ू) है, ने यह समझाने का प्रयास किया है कि कैसे पुलिस ने उसे और उसकी माता से सादे कागजों पर हस्ताक्षर कराकर सेल नंबर 8853630754 को झूठे साक्ष्य के तौर पर दिखाया। उसने अपनी मुख्य परीक्षा में इस प्रकार कहा है: "....

हाज़िर अदालत अभियुक्त मुकेश गुप्ता मेरे साढ़ू है 'एक्स' की मृत्यु के करीब 15 दिन पश्चात मैं अपनी मां के साथ मुकेश गुप्ता के घर पर व उनके छोटे छोटे बच्चों की देखभाल के लिए था मेरी पत्नि भी वही थी पुलिस वाले मुकेश गुप्ता के घर पर आये और मुझसे व मेरी मां से एक साथ कागज पर दस्तखत कराये थे लेकिन मैंने उन्हें कोई मोबाइल सिम पड़ा हुआ या बिना सिम का नहीं दिया था। मुझसे व मेरी मां से दस्तखत कराते समय कागज सादा था। कोई लिखापढ़ी नहीं हुई थी। 'एक्स' की मृत्यु के समय मुकेश गुप्ता के साथ मोबाइल नं0 9794339343 रहता था। मुकेश गुप्ता का मोबाइल नं0 8853630754 नहीं था। किसका था? मुझे नहीं पता।

पत्रावली में संलग्न कागज सं0 7क जो प्रदर्श क-16 हैं, पर मेरे हस्ताक्षर बने हैं। तथा मेरी मां के भी हस्ताक्षर बने हैं लेकिन उस पर सारी लिखा पढ़ी पुलिस ने बाद में थी। मैंने कोई मोबाइल फोन पुलिस को नहीं दिया था और न ही किसी पुलिस वाले ने मुझसे पूछताछ की थी।"

54. अपनी जिरह में, बचाव गवाह-2 ने कहा है:

"यह कहना गलत है कि मोबाइल नं0 8853630754 मैंने पुलिस को दिया हो।

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



यह कहना गलत है कि पुलिस ने फर्द की लिखा पढ़ी करके सुनाकर मुझसे उस पर हस्ताक्षर कराये हो।"

55. अपीलार्थियों ने एक सुसंगत स्पष्टीकरण, या यों कहें कि अन्यत्र उपस्थिति (एलिबाई) प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, जो अपराध स्थल से उनकी अनुपस्थिति को प्रदर्शित करता है - अपीलार्थी मुकेश गुप्ता के मामले में उसके घर और गांव से, और सीमा गुप्ता के मामले में, घर के उस हिस्से से, जहां अपराध किया गया था। हमें खेद है कि इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

56. जहाँ तक मुकेश गुप्ता का संबंध है, जिसने अपनी अन्यत्र उपस्थिति (एलिबाई) में घर से अपनी अनुपस्थिति की दलील दी है, वह उस चालक की गवाही पर भरोसा करता है, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह मंगलवार, 19 अगस्त को पशुधन व्यापारी धर्मेन्द्र की बकरियों के झुंड के साथ उसे जसवंत नगर, इटावा ले गया था। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस गवाह ने अपीलार्थियों के जसवंत नगर, इटावा तक धर्मेन्द्र की बकरियों के साथ गाड़ी चलाकर जाने, जिन्हें मुकेश वहां के बुधवार के बाजार में बेचता, के साथ-साथ 20 तारीख की सुबह 4.00 बजे मुकेश को अपराध के बारे में अपनी पत्नी से दूरभाष प्राप्त होने के मामले का समर्थन किया है, लेकिन यह एक सुस्थापित सिद्धांत है कि यदि अभियोजन पक्ष ने अपराध स्थल पर आरोपी की उपस्थिति स्थापित कर दी है, तो अन्यत्र उपस्थिति (एलिबाई) एक ऐसी दलील है जिसे बचाव पक्ष द्वारा कड़ाई से साबित किया जाना चाहिए। अब, इस मामले में, अपराध स्थल पर मुकेश गुप्ता की उपस्थिति का प्रमाण अभियोजन गवाह-1 और अभियोजन गवाह-2, अर्थात् मृतक प्रदीप के भाई ब्रजेश कुमार और अभियोजन गवाह-2, प्रदीप की माता श्रीमती सियारानी द्वारा स्थापित किया गया है। इन गवाहों द्वारा अपनी मुख्य परीक्षा में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि मुकेश ने चलभाष पर प्रदीप की उन दोनों से बात कराई थी।

57. अभियोजन गवाह-1 ने इस तथ्य की गवाही दी है कि उसके चलभाष संख्या 9621820180 पर चलभाष संख्या 8853630754 से एक दूरभाष प्राप्त हुआ था। हो सकता है कि यह चलभाष मुकेश गुप्ता के नाम पर जारी सिमकार्ड का उपयोग न कर रहा हो, लेकिन निश्चित रूप से यह उसके उपयोग में था। पुलिस ने 09.09.2014 को इस सिम नंबर को नोकिया कंपनी के एक काले रंग के मोबाइल हैंडसेट में लगा हुआ, मुकेश गुप्ता के सादर सोनू गुप्ता से बरामद किया और इसे सील कर दिया। सेल नंबर 8853630754 वाले इस मोबाइल फोन से संबंधित बरामदगी मेमो दो गवाहों, अर्थात् योगेश कुमार गुप्ता और ज्ञान देवी गुप्ता की उपस्थिति में तैयार किया गया था। कॉल डिटेल रिकॉर्ड, प्रदर्शक-19 के अनुसार, अभियोजन गवाह-1 को अपने चलभाष संख्या 9621820180 पर मुकेश गुप्ता से जो दूरभाष प्राप्त हुए,

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



वे 19.08.2014 को संख्या में दो थे। पहला दूरभाष रात 11.53 बजे और दूसरा रात 11.55 बजे किया गया था। इस कॉल डिटेल् रिकॉर्ड को जांच अधिकारी, अभियोजन गवाह-9 ने अपनी गवाही में इसकी सत्यता स्थापित करने के लिए पर्याप्त रूप से साबित किया है। यही वह मोबाइल फोन था, जिसका उपयोग मुकेश गुप्ता ने प्रथम सूचनादाता, अभियोजन गवाह-1 से बात करने के लिए किया था। भले ही यह मान लिया जाए कि अभियोजन गवाह-1 मुकेश गुप्ता की आवाज से परिचित नहीं था वह निश्चित रूप से अपने भाई, मृतक प्रदीप की आवाज से परिचित था। इन दूरभाषों के माध्यम से अभियोजन गवाह-1 की मुकेश और प्रदीप के साथ हुई बातचीत को अभियोजन गवाह-1 द्वारा अपनी मुख्य परीक्षा में इस प्रकार बताया गया है:

"दि० 19-8-2014 को रात 11.38 पर मेरे फोन नं० 9621820180 पर फोन नम्बर 8853630754 से फोन आया। पहले कहा कि सीमा गुप्ता बोल रही थी। फिर कहा कि मुकेश गुप्ता बाराकलां बोल रहा हूँ और इन्होंने बताया कि आपके भाई प्रदीप कुमार के मेरी लड़की के साथ नाजायज सम्बन्ध है। प्रदीप ने मेरी लड़की को गर्भवती बना दिया है। फिर मुकेश गुप्ता ने मेरे भाई प्रदीप से मेरी बात करायी। प्रदीप ने मुझे बताया कि मेरे मुकेश गुप्ता पर एक लाख रुपये उधार के हैं। जिसकी मैंने उनसे मांग की थी। तब उन लोगों ने मुकेश गुप्ता व सीमा गुप्ता ने यह आरोप लगा दिया कि तुमने हमारी लड़की 'x' को बिन ब्याहे गर्भवती बना दिया। उसके बाद मेरे भाई से फोन ले लिया गया। मेरा भाई बात करते समय बहुत डरा-डरा था। बाद में फिर फोन आया 2 बार आया तब मेरी माँ से बात हुई दुबारा फोन आया तो कहा कि मेरी बेटी को गर्भवती बना दिया है।"

58. अभियोजन गवाह-2, जो अभियोजन गवाह-1 की माता है, ने भी अभियोजन गवाह-1 के चलभाष संख्या 9621820180 पर मुकेश गुप्ता और प्रदीप के साथ बातचीत की थी, जिसमें मुकेश चलभाष संख्या 8853630754 का उपयोग करके बात कर रहा था। यह दूरभाष 19 अगस्त की रात को पहले दूरभाष के कुछ ही मिनटों के भीतर किया गया था। अभियोजन गवाह-2, श्रीमती सियारानी ने अपनी मुख्य परीक्षा में दूरभाष की विषय वस्तु को इस प्रकार बताया है:

"दिनांक 19.8.2014 को रात में फोन आया था। मेरे बड़े लड़के ब्रजेश के पास, फोन आया था। फोन मुकेश गुप्ता का था। मेरे लड़के ने बात की उसके बाद मेरे लड़के ने मुकेश से मेरी बात करायी मुकेश ने मुझसे कहा कि तुम्हारे लड़के प्रदीप ने मेरी लड़की को गर्भवती बना दिया है। मैंने कहा कि जो भी बात हुई हो मैं सुबह आ जाऊंगी फिर मैंने मुकेश से कहा कि प्रदीप से मेरी बात करा दो तो प्रदीप से मेरी बात हुई तो

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



मुकेश ने मेरे लड़के प्रदीप को फोन दिया। मैंने उधर से कहा कि बेटा तुम कहां हो? प्रदीप ने बताया कि मैं मुकेश गुप्ता के घर में हूँ। मैंने कहा कि इतनी रात में तुम वहां क्या कर रहे हो तो प्रदीप ने बताया कि मेरे एक लाख रुपया मुकेश पर उधार के हैं जो मैंने मांगे हैं वही रुपये देने के लिए मुझे आज मुकेश ने अपने घर बुलाया था। जब मैं घर आया तो मुकेश ने अपनी बेटी के साथ मेरे गलत सम्बन्ध होने का आरोप मुझपर लगाया है और कह रहे हैं कि हम तुमको जान से मार देंगे। मेरा लड़का बहुत घबराया हुआ था और कह रहा था कि अम्मा जल्दी आ जाओ नहीं तो ये लोग हमें मार देंगे।"

59. अपनी जिरह में, अभियोजन गवाह-1 अपने मामले पर कायम रहा है कि उसे 19.08.2014 की आधी रात में मुकेश गुप्ता से मोबाइल नंबर 8853630754 का उपयोग करते हुए दूरभाष प्राप्त हुआ था, जहां उसने वह सब बोला जो ऊपर उद्धृत किया गया है, और साथ ही प्रदीप की अभियोजन गवाह-1 से बात कराई। मुकेश ने मृतक प्रदीप की अभियोजन गवाह-2 से भी बात कराई, जो अभियोजन गवाह-1 के साथ-साथ प्रदीप की भी माता है। ये तथ्य यह स्थापित करते हैं कि 19 अगस्त की देर रात में प्रदीप और मुकेश एक साथ थे। चूंकि 19/20.08.2014 की मध्यरात्रि में बारह कलान में मुकेश के घर में प्रदीप की मृत्यु हुई थी, यह स्पष्ट है कि मुकेश अपराध किए जाने के समय अपने घर में उपस्थित था। मुकेश ने पशु व्यापारी की बकरियों को अपने मिनी ट्रक पर जसवंत नगर, इटावा में बेचने के लिए बारह कलान छोड़ने की जो अन्यत्र उपस्थिति (एलिबाई) की दलील पेश की है, वह विश्वास पैदा नहीं करती है। इस कारण से भी, चालक जयवीर, बचाव गवाह-1 की गवाही, जो 19 तारीख को मुकेश को गाड़ी से जसवंत नगर ले जाने का दावा करता है, विश्वास पैदा नहीं करती है, क्योंकि उसके कोरे दावों को छोड़कर, जसवंत नगर की यात्रा को साक्ष्यित करने वाला कोई दस्तावेज नहीं है। यदि यह मान भी लिया जाए कि उन दोनों द्वारा जसवंत नगर ले जाए जा रहे माल के लिए कोई कंसाइनमेंट नोट (प्रेषण पत्र) या जीएसटी (वस्तु एवं सेवा कर) के कागजात नहीं होंगे, उनके व्यापार की तुच्छ प्रकृति को देखते हुए, तो रास्ते में पड़ने वाले विभिन्न टोल प्लाजा या टोल बूथों से टोल की रसीदें तो निश्चित रूप से होंगी, जो राजमार्गों पर चलने वाले वाहनों पर हमेशा लगाया जाने वाला शुल्क है। भले ही रास्ते में कोई टोल बूथ न हो, कुछ अन्य दस्तावेज होंगे, जैसे कि किसी दूर स्थान से संबंधित तिथि की ईंधन रसीद, यह दिखाने के लिए कि यात्रा वास्तव में की गई थी। यह साबित करने के लिए किसी भी दस्तावेज के अभाव में कि जसवंत नगर की यात्रा वास्तव में की गई थी, भले ही पूरी तरह से नहीं तो काफी दूरी तक, बचाव गवाह-1 की कोरी गवाही पर विश्वास करना मुश्किल है क्योंकि अन्यत्र उपस्थिति (एलिबाई) को साबित करने का मानक उच्चतम गुणवत्ता के साक्ष्य के माध्यम से है। अपराध के स्थान और समय पर अपीलार्थी मुकेश गुप्ता की

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



उपस्थिति स्थापित होने के कारण, उसकी अन्यत्र उपस्थिति की दलील की विफलता श्रृंखला में एक और दोषारोपण वाली परिस्थिति बन जाती है।

60. जहाँ तक दूसरी अपीलार्थी, सीमा गुप्ता का संबंध है, उसने यह मामला प्रस्तुत किया है कि वह अपने चार बच्चों के साथ घर की ऊपरी मंजिल के एक कमरे में गहरी नींद में सो रही थी और उस अपराध के बारे में सुबह पता चला, जब वह उठी और अपनी बेटी 'एक्स' को पुकारा। यह वास्तव में अविश्वसनीय है कि 'एक्स', जो स्वयं 15 वर्ष की नाबालिग थी और 19 तारीख को दिन में बदायूं में किए गए एक परीक्षण में गर्भवती पाई गई थी, को अपीलार्थी सीमा गुप्ता द्वारा भूतल पर अकेले सोने के लिए छोड़ दिया गया होगा, घर का वह हिस्सा जहां प्रदीप अपने कमरे में रह रहा था। आखिरकार प्रदीप पर ही 'एक्स' को गर्भवती करने का आरोप था।

61. विद्वान विचारण न्यायाधीश ने भी अपीलार्थी सीमा गुप्ता की अपराध स्थल से दूर होने की अन्यत्र उपस्थिति (एलिबाई) की दलील को खारिज करने के लिए इस तर्क को अपनाया है और हम इस बिंदु पर विद्वान विचारण न्यायाधीश के तर्क से पूर्णतः सहमत हैं। सीमा गुप्ता की अन्यत्र उपस्थिति (एलिबाई) के भी विफल होने पर यह परिस्थिति कि मानववध (हत्याएं) एक कमरे में हुए, जो अपीलार्थियों के परिसर का हिस्सा है, अपीलार्थियों के सामने स्पष्ट रूप से खड़ी है। अपीलार्थियों द्वारा अपने घर के अंदर हुए दोहरे मानववध (हत्याओं) के बारे में आवश्यक साक्ष्य द्वारा समर्थित ठोस स्पष्टीकरण देने में विफल रहने पर, यह तथ्य अपीलार्थियों के विरुद्ध साक्ष्य की श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता है, जो उनकी मिलीभगत (संलिप्तता) के बारे में बताता है।

62. अगली परिस्थिति अपीलार्थी, सीमा गुप्ता द्वारा की गई न्याय्येतर (अदालत के बाहर) स्वीकारोक्ति है, जो यद्यपि अपने आप में एक कमजोर साक्ष्य है, लेकिन अन्य परिस्थितियों के साथ मिलाकर पढ़े जाने पर, विवादक तथ्य पर इसका निर्णायक प्रभाव हो सकता है। यह अभियोजन गवाह-1 की गवाही में आया है, अर्थात्, उसकी मुख्य परीक्षा में कि जब वह, अपने पिता, माता और अन्य सहयोगियों के साथ, बारह कलान पहुंचा, तो उसने मृतक प्रदीप के कमरे के अंदर अपने भाई और 'एक्स' के शव पाए। अपीलार्थी मुकेश आसपास नहीं था, लेकिन उसकी पत्नी, अर्थात् सीमा गुप्ता वहां थी और उसने गवाह से कहा कि उसके भाई ने विवाह के बाहर उसकी बेटी को गर्भवती कर दिया था और इसी कारण उसने उन्हें मार डाला। जिरह में, यद्यपि इस गवाह ने यह स्वीकार किया है कि सूचनादाता और उसके सहयोगी सुबह 11.00 बजे पुलिस थाना कलान गए और वहां से वे ग्राम बारह कलान गए, जहां उन्होंने पुलिस को

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



मौजूद पाया, जिसने सुबह 11.00 बजे से पहले अपीलार्थी सीमा गुप्ता को पकड़ लिया था, लेकिन इस बात का खंडन करने के लिए कुछ भी नहीं है कि सीमा गुप्ता ने इस गवाह या अन्य के सामने स्वीकारोक्ति नहीं की, जो इस तथ्य के बारे में एकमत हैं।

63. जांच अधिकारी, अभियोजन गवाह-9, अपनी मुख्य परीक्षा और जिरह में, इस तथ्य पर कायम रहे हैं कि 20.08.2014 को दोपहर 12.30 बजे थाना कलान में मामला दर्ज होने के बाद, पुलिस ग्राम बारह कलान के लिए रवाना हुई, जहां उन्हें अपीलार्थी मुकेश गुप्ता नहीं मिला।

64. अभियोजन गवाह-1 की गवाही भी, जो अपनी जिरह में कहता है कि पुलिस ने सीमा को पकड़ रखा था, इन शब्दों में 'लेकिन सीमा को पुलिस पकड़े हुए थी', अभियोजन गवाह-1, 2, 3 और 4 की गवाही को सुसंगत बनाती है कि जब वे घटनास्थल पर पहुंचे, तो सीमा दोनों शवों के बीच कहीं बैठी थी और प्रदीप और 'एक्स' की हत्या करने की स्वीकारोक्ति कर रही थी, जो आखिरकार पुलिस हिरासत में की गई स्वीकारोक्ति थी।

65. सीमा गुप्ता ने दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के साथ पठित धारा 233(2) के तहत अपने बयान में यह रुख अपनाया है कि 'एक्स' और प्रदीप की मृत्यु का पता चलने पर, उसने तुरंत अपने पति को, जो जसवंत नगर गया हुआ था, इस अनहोनी के बारे में सूचित किया। उसने उसे तुरंत पुलिस चौकी बारह कलान को सूचित करने की सलाह दी, जो उसने किया, लेकिन पुलिस ने उसे पुलिस चौकी पर हिरासत में ले लिया। इस दावे को अभियोजन गवाह-1 की जिरह में इस तथ्य की स्वीकारोक्ति से समर्थन मिलता है कि सीमा को 11.00 बजे से पहले पुलिस द्वारा पकड़ लिया गया था।

66. ऐसा प्रतीत होता है कि सीमा को सुबह 11.00 बजे से पहले बिना औपचारिक गिरफ्तारी के पुलिस द्वारा पकड़ लिया गया था और सूचनादाता और उसके सहयोगियों के वहां पहुंचने तक वह घर पर उपलब्ध थी। इसलिए, अभियोजन गवाह-1 से लेकर अभियोजन गवाह-4 तक ने सीमा से दोनों पीड़ितों की हत्या करने के बारे में जो स्वीकारोक्तियां सुनीं, वे स्पष्ट रूप से पुलिस हिरासत में रहते हुए की गई थीं, हो सकता है संदेह के आधार पर और प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज होने से पहले। ये स्वीकारोक्तियां साक्ष्य अधिनियम की धारा 26 के तहत अस्वीकार्य होंगी।

67. राज्य की ओर से विद्वान अपर शासकीय अधिवक्ता द्वारा यह प्रस्तुत किया गया था कि जांच शुरू होने के बाद, अर्थात् प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज होने के बाद पुलिस अधिकारी के समक्ष की गई स्वीकारोक्ति

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



अस्वीकार्य है। यह आग्रह किया गया है कि किसी व्यक्ति पर अपराध का आरोप लगाए जाने से पहले, उसके द्वारा की गई स्वीकारोक्ति साक्ष्य अधिनियम की धारा 25 से प्रभावित नहीं होगी। इस मामले में प्रथम सूचना रिपोर्ट दोपहर 12.30 बजे दर्ज की गई थी और ये स्वीकारोक्तियां सुबह लगभग 11.00 बजे की गई थीं। भले ही सीमा को संदिग्ध के रूप में पकड़ा गया था, वह साक्ष्य अधिनियम की धारा 26 के अर्थ के भीतर एक पुलिस अधिकारी की हिरासत में थी।

68. पुलिस अधिकारी के समक्ष की गई स्वीकारोक्ति और पुलिस अधिकारी की हिरासत में रहते हुए किसी व्यक्ति द्वारा की गई स्वीकारोक्ति के बीच अंतर है। पूर्व साक्ष्य अधिनियम की धारा 25 द्वारा शासित है और बाद वाला धारा 26 द्वारा। धारा 26 के तहत संदर्भित स्वीकारोक्ति पुलिस अधिकारी के अलावा किसी अन्य व्यक्ति के समक्ष की जा सकती है लेकिन उसकी हिरासत में रहते हुए, जबकि धारा 25 के तहत आवश्यक रूप से पुलिस अधिकारी के समक्ष की गई स्वीकारोक्ति है। धारा 26 के तहत स्वीकारोक्ति पुलिस हिरासत में रहते हुए किसी अन्य व्यक्ति के समक्ष की जा सकती है, या स्वयं पुलिस अधिकारी के समक्ष हो सकती है, लेकिन पुलिस की हिरासत में। धारा 26 का दायरा व्यापक है क्योंकि वहां प्रतिबंध उस व्यक्ति के मामले पर लागू होता है, जो शब्द के कानूनी अर्थ में अभी तक अपराध का आरोपी नहीं है, लेकिन पुलिस की हिरासत में है जो तथ्यों का पता लगाने या अपराध के औपचारिक पंजीकरण के लंबित रहने तक एक संदिग्ध के रूप में हो सकता है।

69. इसके विपरीत, धारा 25 उस मामले में आकर्षित होगी जहां स्वीकारोक्ति करने वाले व्यक्ति पर अपराध का आरोप है, हो सकता है कि उसके खिलाफ दर्ज प्रथम सूचना रिपोर्ट के परिणामस्वरूप या जांच के लंबित रहने तक आरोपी होने के परिणामस्वरूप। वह हिरासत में हो भी सकता है और नहीं भी। इसलिए, धारा 25 और 26 का दायरा बहुत भिन्न है। यहां, साक्ष्य अधिनियम की धारा 26 आकर्षित होती है, जहां सीमा स्पष्ट रूप से एक संदिग्ध के रूप में पुलिस हिरासत में थी, जब उसने वे स्वीकारोक्तियां कीं जिनका आरोप अभियोजन गवाह-1, 2, 3 और 4 द्वारा उस पर लगाया गया है। प्रथम सूचना रिपोर्ट दिन में बाद में दर्ज की गई थी। फिर भी, चूंकि सीमा स्पष्ट रूप से पुलिस हिरासत में थी, उस पर आरोपित न्याय्यतर (अदालत के बाहर की गई) स्वीकारोक्तियों को उसके खिलाफ नहीं पढ़ा जा सकता है, जब तक कि ये मजिस्ट्रेट की तत्काल उपस्थिति में न हों, जो कि यहां मामला नहीं है। इसलिए, हमारी यह राय है कि न्याय्यतर स्वीकारोक्ति के बारे में परिस्थिति को इस मामले में अपीलार्थियों के खिलाफ नहीं पढ़ा जा सकता है।

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



70. विद्वान अपर शासकीय अधिवक्ता ने ईश्वरी लाल यादव और अन्य बनाम छत्तीसगढ़ राज्य, (2019) 10 एस.सी.सी. 437 पर भरोसा किया है, जहां सर्वोच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीशों की तीन न्यायाधीशों की पीठ के लिए बोलते हुए, न्यायमूर्ति आर. सुभाष रेड्डी ने अभिनिर्धारित किया:

“21. अपीलार्थियों द्वारा पुलिस के समक्ष दिए गए संस्वीकृति (कबूलनामे) के बयान, आरोपी के अपराध को साबित करने का आधार नहीं हो सकते हैं, लेकिन साथ ही चिराग का शव मिलने के समय, पुलिस के आने से पहले, स्वतंत्र गवाहों के समक्ष की गई संस्वीकृतियों को खारिज करने का कोई कारण नहीं है। यह सच है कि न्याय्यतर (अदालत के बाहर) संस्वीकृति, साक्ष्य का एक कमजोर हिस्सा है, लेकिन साथ ही यदि रिकॉर्ड पर मौजूद अन्य साक्ष्यों द्वारा इसकी पुष्टि की जाती है, तो आरोपी के अपराध को साबित करने के लिए ऐसी संस्वीकृति पर विचार किया जा सकता है। वर्तमान मामले में, स्वतंत्र गवाहों के साक्ष्य एक स्वर में और सुसंगत हैं। रिकॉर्ड पर मौजूद चिकित्सा साक्ष्य ने भी अभियोजन पक्ष के मामले की पुष्टि की है। इसके अतिरिक्त, अभियोजन गवाह 2 और अभियोजन गवाह 3, जो मृतक के माता-पिता हैं, ने उन कपड़ों की पहचान की है, जिन्हें मृतक बच्चा लापता होने की तिथि पर पहने हुए था। साक्ष्य से यह भी स्पष्ट है कि कंकाल के अवशेष हटा दिए गए थे। उन्हें कंकाल के अवशेषों से जुड़े कपड़े के टुकड़े भी मिले हैं। ऐसे कपड़े के टुकड़ों के रंग का मिलान अभियोजन गवाह 2 द्वारा पूर्व में 4-3-2010 को दर्ज कराई गई गुमशुदगी की रिपोर्ट में दिए गए विवरण से किया गया था। इस प्रकार यह किसी भी उचित संदेह से परे स्पष्ट रूप से साबित होता है कि अपीलार्थी उनके खिलाफ लगाए गए अपराध के लिए जिम्मेदार हैं।”

71. हमें यह ध्यान देना चाहिए कि ईश्वरी लाल यादव (उपरोक्त) एक ऐसा मामला था जहां पुलिस के आने से पहले एक स्वतंत्र गवाह के समक्ष संस्वीकृतियां (कबूलनामे) की गई थीं। यह ऐसा मामला नहीं था जहां संस्वीकृति करने वाला एक संदिग्ध के रूप में भी पुलिस हिरासत में था। इसलिए, ईश्वरी लाल यादव मामले में निर्धारित सिद्धांत का वर्तमान मामले के संदर्भ में कोई प्रयोज्यता नहीं है, जहां सीमा पुलिस की हिरासत में थी, भले ही एक संदिग्ध के रूप में, जब उसके बारे में कहा जाता है कि उसने संस्वीकृतियां की थीं। हमारी यह राय है कि संस्वीकृतियां साक्ष्य अधिनियम की धारा 26 से प्रभावित थीं और उन्हें उसके खिलाफ नहीं पढ़ा जा सकता है; मुकेश गुप्ता के खिलाफ तो और भी नहीं। इस सीमा तक, हम विद्वान विचारण न्यायाधीश के इसके विपरीत दिए गए तर्क से सहमत नहीं हैं।

अस्वीकरण

“अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



72. ध्यान देने वाली अंतिम परिस्थिति वह दूरभाष है, जो अभियोजन गवाह-1 को किसी मास्टर रामवीर सिंह यादव से प्राप्त हुआ था। वह स्पष्ट रूप से मृतक प्रदीप का सहयोगी था और उसने उसके भाई, अभियोजन गवाह-1 को सुबह 6.00 बजे दूरभाष किया और उसे सूचित किया कि उसके भाई और 'एक्स' की अपीलार्थियों द्वारा हत्या कर दी गई है। अभियोजन गवाह-1 ने अपनी मुख्य परीक्षा में गवाही दी है:

"..... उसके बाद मैं अपनी माता जी व पिता ईश्वर दयाल व राकेश कटियार अशोक कटियार, नारेन्द्र कटियार, प्रदीप कटियार को लेकर बोलेरो गाड़ी में बाराकलां आये उसी बीच मुझे मेरे भाई के साथ पढ़ाने वाले मास्टर रामवीर सिंह यादव का फोन (दूरभाष) मिला। तो उन्होंने सूचना दी कि तुम्हारे भाई प्रदीप का व 'एक्स' का मर्डर (हत्या) हो गया है। उन्हीं दोनों को मुकेश गुप्ता व उसकी पत्नी सीमा ने गले में फन्दा डालकर हत्या कर दी है फिर मैं प्रदीप के कमरे पर आया..."

73. अपनी जिरह में, इस गवाह ने कहा है:

".....जिन मास्टर जी (रामवीर सिंह यादव) का फोन (दूरभाष) आना मैंने बताया है उनका नम्बर 7525079412 था। यह फोन करीब 6 बजे सुबह मेरे मोबाइल पर आया था। मुझे ध्यान नहीं है कि उपरोक्त फोन मोबाइल वाली बातें सही हैं या गलत हैं।...."

74. यद्यपि, उसकी जिरह की अंतिम पंक्ति में ध्यान दिया गया है, उसने कहा है कि उसे याद नहीं है कि रामवीर सिंह यादव के मोबाइल कॉल (दूरभाष) के बारे में तथ्य सही हैं या नहीं, यह अपीलार्थी मुकेश और मास्टर रामवीर सिंह यादव से पहले प्राप्त मोबाइल कॉल का एक सामान्य संदर्भ है। यह विसंगति इस तथ्य को कम नहीं करती है कि मास्टर रामवीर सिंह यादव का दूरभाष, जो अपने मोबाइल नंबर 7525079412 से बात कर रहे थे, अभियोजन गवाह-1 को सुबह 6.00 बजे प्राप्त हुआ था, जिसमें उसे सूचित किया गया था कि उसके भाई और 'एक्स' की अपीलार्थियों द्वारा हत्या कर दी गई थी। सूचनादाता द्वारा अपने मोबाइल नंबर 9621820180 पर यह दूरभाष प्राप्त होना कॉल डिटेल रिकॉर्ड (दूरभाष विवरण रिकॉर्ड), प्रदर्श 21 के अवलोकन से स्पष्ट है, जहां अभियोजन गवाह-1 के फोन नंबर पर सेल नंबर 7525079412 से आने वाली कॉल को कॉल डिटेल रिकॉर्ड में सुबह 10.35 बजे प्राप्त होने के रूप में दर्शाया गया है। इसलिए, अभियोजन गवाह-1 को मास्टर यादव से दूरभाष प्राप्त हुआ था, लेकिन सुबह 6.00 बजे नहीं। यह 20.08.2014 को सुबह 10.35 बजे प्राप्त हुआ था। अभियोजन गवाह-1 को मास्टर रामवीर सिंह यादव से दूरभाष प्राप्त होने का तथ्य, इसलिए, साबित होता है और साथ ही वह जानकारी

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



भी, जो अभियोजन गवाह-1 को अपने मोबाइल फोन पर मास्टर रामवीर सिंह यादव से प्राप्त हुई थी, हालांकि यह तथ्य नहीं कि रामवीर सिंह यादव द्वारा दी गई यह जानकारी वास्तव में सही थी कि दोहरी हत्या की गई थी। यह तथ्य बाद में सत्य पाया गया, जब अभियोजन गवाह-1 और अभियोजन पक्ष के अन्य गवाह घटना स्थल पर पहुंचे। इसलिए, साबित होने वाली परिस्थिति यह है कि अभियोजन गवाह-1 को मृतक प्रदीप के सहयोगी, मास्टर रामवीर सिंह यादव से एक दूरभाष प्राप्त हुआ था, जिसका आशय यह था कि अपीलार्थियों द्वारा 'एक्स' और प्रदीप की हत्या कर दी गई है, जो कि दोहरी हत्या किए जाने की सीमा तक एक तथ्य के रूप में सत्य पाया गया।

75. इसलिए, अभियोजन पक्ष द्वारा निम्नलिखित परिस्थितियों को पूरी तरह से साबित कर दिया गया है:

(क) कि प्रदीप अपीलार्थियों के घर के एक हिस्से में किराएदार था;

(ख) कि अभियोजन गवाह-1, मृतक प्रदीप के भाई को 19.08.2014 की रात को मोबाइल नंबर 8853630754 से एक दूरभाष प्राप्त हुआ, जहां दूरभाष करने वाले ने अपनी पहचान अपीलार्थी मुकेश गुप्ता के रूप में बताई और मृतक प्रदीप पर अपनी अविवाहित बेटी को गर्भवती करने का आरोप लगाया, और फोन पर प्रदीप की अभियोजन गवाह-1 से बात कराई। दूरभाष एक बार फिर किया गया और प्रदीप ने अभियोजन गवाह-2 से भी बात की, जो अभियोजन गवाह-1 के नंबर पर उसी नंबर से कॉल कर रहा था;

(ग) कि मोबाइल नंबर 8853630754 वाला फोन, पुलिस द्वारा अपीलार्थी मुकेश गुप्ता के घर से सोनू नामक व्यक्ति, जो अपीलार्थी मुकेश का साढ़ू था और परिसर में रह रहा था, की हिरासत से बरामद किया गया था;

(घ) कि अभियोजन गवाह-1 को रात 11.56 बजे प्राप्त अंतिम दूरभाष तक प्रदीप 19.08.2014 को जीवित था;

(ङ) कि प्रदीप और 'एक्स' की मृत्यु 19.08.2014 की मध्यरात्रि और 20.08.2014 की सुबह के घंटों के बीच किसी समय हुई, निश्चित रूप से 20.08.2014 को सुबह 11.00 बजे से पहले और प्रदीप और 'एक्स' के शव अपीलार्थियों के परिसर के भीतर एक कमरे में पाए गए थे;

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



(च) कि 15 वर्ष की लड़की 'एक्स' का 19.08.2014 को बदायूं में एक स्त्री रोग विशेषज्ञ, डॉ. मंजू वर्मा द्वारा परीक्षण किया गया था और अविवाहित होने के बावजूद, वह 19.08.2014 की चिकित्सा रिपोर्ट में गर्भवती पाई गई थी;

(छ) कि विवाह के बाहर उसकी गर्भावस्था का पता चलने के तुरंत बाद, 19/20.08.2014 की मध्यरात्रि में प्रदीप और 'एक्स' दोनों की हत्या कर दी गई थी, जहां अपीलार्थियों द्वारा प्रदीप पर 'एक्स' को गर्भवती करने का संदेह था;

(ज) कि मृत्यु का कारण गला घोटना है और ऐसी कोई असाधारण युक्ति नहीं है, जो यह दिखा सके कि गला घोटना आत्महत्या थी;

(झ) कि परिस्थितियों की समग्रता में अपीलार्थियों के लिए प्रदीप और 'एक्स' की हत्या करने का एक मजबूत उद्देश्य था; और,

(ञ) यह तथ्य कि अपीलार्थी अपने परिसर की सीमा के भीतर दोहरी हत्याओं के बारे में कोई स्पष्टीकरण लेकर नहीं आए हैं, एक ऐसा तथ्य जो विशेष रूप से उनके ज्ञान में है और इस संबंध में साक्ष्य अधिनियम की धारा 106 के तहत अपना भार उतारने में विफल रहे हैं।

76. इन सभी परिस्थितियों को एक साथ रखने पर, हमारी सुविचारित राय में, एक पूर्ण और अखंड श्रृंखला स्थापित होती है, जो केवल अपीलार्थियों के अपराध के अनुरूप है और किसी अन्य संभावित परिकल्पना के नहीं। इसलिए, हमारी यह राय है कि विद्वान विचारण न्यायाधीश द्वारा अपीलार्थियों को भारतीय दंड संहिता की धारा 302/34 के तहत दंडनीय अपराध के लिए सही रूप से सिद्धदोष ठहराया गया है। न्यूनतम अनुमेय दंडादेश दिया गया है, जो, हमारी राय में, उचित है।

77. हम इन अपीलों में सुश्री श्वेता सिंह राणा द्वारा दी गई बहुत ही सक्षम सहायता के लिए अपनी सराहना को रिकॉर्ड पर रखते हैं, जिन्होंने अपने मुवक्किलों के लिए एक कठिन मामले में सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया।

78. परिणामस्वरूप, दोनों अपीलें विफल होती हैं और खारिज की जाती हैं। अपीलार्थी श्रीमती सीमा गुप्ता जमानत पर हैं। वह इस निर्णय की तिथि से दो सप्ताह की अवधि के भीतर आत्मसमर्पण करेंगी, जिसमें

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



विफल रहने पर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, शाहजहांपुर, उन्हें हिरासत में लेने और अपना दंडादेश भुगतने के लिए जेल भेजने की व्यवस्था करेंगे। अपीलार्थी श्रीमती सीमा द्वारा प्रस्तुत किए गए जमानत बंधपत्र रद्द किए जाते हैं और प्रतिभुओं (जमानतदारों) को उन्मोचित किया जाता है।

79. यह आदेश निबंधक (अनुपालन) द्वारा जेल अधीक्षक, पीलीभीत के माध्यम से अपीलार्थी, मुकेश गुप्ता को संप्रेषित किया जाएगा, जो जेल में है।

80. इस आदेश की एक प्रति सूचना और आवश्यक अनुपालन के लिए निचली अदालत के रिकॉर्ड के साथ संबंधित विचारण न्यायालय को अग्रेषित की जाए।

(विनय कुमार द्विवेदी, न्यायमूर्ति) (जे.जे. मुनीर, न्यायमूर्ति)

11 फरवरी 2026

अनूप

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"